हरिभूमि
झज्जर-बहादुरगढ़ भूमि
रोहतक, रविवार, 12 अक्टूबर 2025

11 गवर्नमेंट गर्ल्स कॉलेज में लगा दिवाली मेला

12 पूरी दुनिया में धूम मचा रही सांगानेरी हाथ की छपाई

बहादुरगढ़। कंटीली तारों से करंट लगने के बाद फर्श पर गिरा बंदर का शव। फोटो: हरिभूमि

कोठी की सुरक्षा बनी मासूमों की मौत का जाल

बहादुरगढ़ में इंसानियत फिर शर्मसार, करंट भरी कंटीली तारों ने छीनी मां की सांसें, छाती से चिपका रोता रहा नन्हा बंदर

सेक्टर-6 की कोठी का मामला जीवप्रेमियों ने थाने में पहुंचकर दी शिकायत

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बहादुरगढ़

शहर के सेक्टर-6 स्थित एक कोठी में लगाई गई कंटीली तारें मासूम जीवों के लिए मौत का जाल बन गई हैं। इन तारों में रात के समय करंट छोड़ा जाता है।

इसी वजह से शुक्रवार की रात एक मादा बंदर की दर्दनाक मौत हो गई। इससे पहले मंगलवार को भी इसी मकान में एक बंदर की जान गई थी। चंद दिनों में दो मासूमों की मौत से जीवप्रेमी आहत हैं और उन्होंने इसे दुर्घटना के बजाय हत्या करार दिया है। पुलिस को शिकायत देकर न्याय की गुहार लगाई है। दरअसल, शनिवार की सुबह यह दूसरा मामला सामने आया।

इस दफा दृश्य इतना हृदयविदारक था कि मृत मादा बंदर की छाती से उसका बच्चा चिपका हुआ था। वह लगातार चीख रहा था, शायद उसे एहसास नहीं था कि उसकी मां अब कभी नहीं लौटेगी। इस दृश्य को देखकर जीवप्रेमियों की आंखें नम हो गईं। घटना से आहत पशु प्रेमियों ने पुलिस को शिकायत दी। चूंकि मामला मूक प्राणी का है, तो पुलिस ने कोई खास गंभीरता नहीं दिखाई।

≫ पुलिस ने मकान मालिक को तारें हटवाने के निर्देश दिए

कार्रवाई न हुई तो उच्चाधिकारियों के पास जाएंगे

हालांकि बाद में पुलिस ने मकान मालिक को तारें हटवाने के निर्देश दिए, जिसके बाद उन्हें हटाने का काम शुरू भी हो गया है। जानकारी के अनुसार, सत्ताधारी दल के कुछ नेता आरोपी परिवार के पक्ष में थाने में पैरवी करते देखे गए। वहीं, यह भी स्पष्ट नहीं हो सका है कि मृत बंदर के शव का क्या किया गया और उसका मासूम बच्चा अब कहां है। एडवोकेट नवीन सिंगल ने कहा कि यह सिर्फ लापरवाही नहीं बल्कि गंभीर अपराध है। इसमें एक जीव की जान गई है और एक बच्चा अनाथ हो गया है। ऐसे में कानूनी कार्रवाई बनती है, जिनमें सजा का स्पष्ट प्रावधान है। उन्होंने कहा कि अगर थाना पुलिस ने कार्रवाई नहीं की तो वे उच्चाधिकारियों के पास जाएंगे।

सीएमओ हरियाणा को कराया अवगत

इस संबंध में एडवोकेट नवीन सिंगल ने एक्स पर सीएमओ हरियाणा को भी टैग कर मामले से अवगत कराया है। उन्होंने कहा कि दोनों मामलों में बन्दरों के शवों को गायब कर दिया गया ताकि पोस्टमार्टम नहीं हो सके। वहीं, जीवप्रेमियों का कहना है कि पुलिस ने पहले वाले मामले में कार्रवाई की होती तो आज एक बच्चे के सिर से उसकी मां की ममता का साया नहीं उठता। अब देखने वाली बात यह है कि क्या मासूम मूक प्राणियों को न्याय मिल पाएगा या फिर एक बार फिर रसूखदारों के आगे न्याय व्यवस्था घुटने टेक देगी।

खबर संक्षेप

साइबर अपराध को लेकर किया जागरुक

बहादुरगढ़। शनिवार को शहर के मॉडर्न स्कूल में आयोजित सेमिनार में विद्यार्थियों को साइबर अपराधियों द्वारा अपनाए जाने वाले ठगी के तौर-तरीकों की जानकारी दी गई। उनसे बचाव व सुरक्षा के लिए आवश्यक सावधानियां रखने बारे जागरूक किया गया। स्कूल निदेशक एडवोकेट भुवनेश सांगवान ने कहा कि किसी भी सूरत में अपने बैंक खाते से संबंधित कोई भी जानकारी अथवा पासवर्ड या ओटीपी इत्यादि को किसी से भी शेयर ना करें, किसी के कहने पर कोई भी ऐप डाउनलोड ना करें, लोन के संबंध में कोई भी एप्लीकेशन डाउनलोड ना करें, अंजान लिंक पर क्लिक न करे, किसी अंजान के कहने पर कोई भी ऑनलाइन ट्रांजेक्शन न करें।

दुर्घटना में विक्की सवार की मौत, केस दर्ज

बहादुरगढ़। बादली के बाइपास पर विक्की सवार एक व्यक्ति को अज्ञात वाहन ने टक्कर मार दी। हादसे में उसकी मौत हो गई। पुलिस को दी शिकायत में रोहद निवासी संजय ने बताया कि शनिवार को उसका बड़ा भाई रमेश अपनी विक्की पर सवार होकर घर से गांव बादली जा रहा था। वहां उसकी सिलाई मशीन ठीक करने की दुकान है। बादली बाइपास पर बुपनिया रोड के निकट अज्ञात वाहन ने उसकी विक्की में पीछे से टक्कर मार दी। जोरदार टक्कर के कारण वह गंभीर रूप से चोटिल हो गया और मौके पर ही उसकी मौत हो गई। शिकायत के आधार पर बादली थाना पुलिस ने अज्ञात वाहन चालक के विरुद्ध अभियोग दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

नहरों के किनारों पर पड़ी गंदगी की सफाई करवाई, आमजन को मिली बड़ी राहत

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बहादुरगढ़

हरियाणा राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड ने नगर प्रशासन के सहयोग से सेक्टर-7 के निकट बहने वाली नहरों के किनारों पर पड़ी गंदगी की सफाई करवाई गई। यह कार्य स्वच्छता अभियान के तहत करवाया गया, ताकि नहर के आसपास का वातावरण स्वच्छ और प्रदूषणमुक्त रहे। एचएसपीसीबी के क्षेत्रीय अधिकारी शैलेंद्र अरोड़ा ने बताया कि पिछले कुछ समय से नहरों के किनारों पर प्लास्टिक, कचरा और गाद जमा हो गई थी, जिससे दुर्गंध और मच्छरों का प्रकोप बढ़ रहा था।

इसको देखते हुए सफाई कर्मचारियों को मौके पर भेजकर पूरी तरह सफाई करवाई गई। उनके द्वारा लोगों से अपील की गई कि वे नहरों के किनारों पर कूड़ा न फेंकें। नगर परिषद ने भी चेतावनी दी है कि गंदगी फैलाने वालों पर जुर्माना भी लगाया जा सकता है। क्योंकि स्वच्छता बनाए रखना सभी की जिम्मेदारी है। ऐसे प्रयासों से न केवल शहर का पर्यावरण सुधरेगा, बल्कि लोगों में स्वच्छता के प्रति जागरूकता भी बढ़ेगी।

▶▶ नगर परिषद ने भी चेतावनी दी है कि गंदगी फैलाने वालों पर जुर्माना भी लगाया जा सकता है।

≫ ऐसे प्रयासों से केवल शहर का पर्यावरण भी सुधरेगा

सेक्टर-17 के निकट जाखौदा अंडरपास पर भरवाए गड्ढे

बहादुरगढ़। शहर के बाइपास पर सेक्टर-17 के निकट जाखौदा अंडरपास की मरम्मत करवाने के लिए बहादुरगढ़ चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज तथा फुटवियर पार्क एसोसिएशन के प्रयास रंग लाए हैं। बीसीसीआई उपाध्यक्ष नरेंद्र छिकारा के अनुसार जाखौदा अंडरपास में लंबे समय से पानी भरा हुआ था और गहरे गड्ढे थे। जिसके कारण सभी व्यापारियों व कर्मचारियों को आवागमन में काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा था। लेकिन अब यहां सफाई करवा दी गई है। प्रशासनिक सहयोग से उद्योग क्षेत्र के लिए आवागमन सुगम बनाने के प्रयास

विस्तार व्याख्यान का आयोजन

हर हाल में नशे से दूर रहें विद्यार्थी: इंस्पेक्टर

बहादुरगढ़। विद्यार्थियों को लेक्चर देते इंस्पेक्टर सतीश कुमार।

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बहादुरगढ़

बादली के चौधरी धीरपाल राजकीय महाविद्यालय में सड़क सुरक्षा प्रकोष्ठ के अंतर्गत विस्तार व्याख्यान का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्राचार्य आनंद काद्यान ने की।

इंस्पेक्टर सतीश कुमार ने मुख्यातिथि के तौर परनशा मुक्ति और सड़क सुरक्षा विषय पर अपने विचार विद्यार्थियों के सामने रखें। उन्होंने बताया कि हमें हर परिस्थिति में नशे से दूर रहना चाहिए। सभी विद्यार्थियों को सड़क सुरक्षा संबंधी नियमों की जानकारी होनी चाहिए व नियमों का पालन करना चाहिए। दो पहिया वाहन चलाते समय हेलमेट का उपयोग करना चाहिए। निर्धारित गति सीमा के अनुसार वाहन चलाना चाहिए। डॉ रवींद्र ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

ट्रक की टक्कर से बाइक सवार किसान की मौत

झज्जर। गांव बिरधाना के नजदीक अज्ञात वाहन की टक्कर से मोटरसाइकिल सवार किसान की मौत हो गई। उसकी पहचान शहर के आर्यनगर निवासी करीब 48 वर्षीय जयवीर पुत्र हवा सिंह के तौर पर हुई है। जयवीर खेती बाड़ी का कार्य करता था। वह शनिवार की सुबह करीब सात बजे किसी काम से आठ वर्षीय भतीजे के साथ मोटरसाइकिल पर बिरधाना जा रहा था।

इसी दौरान नहर के नजदीक उसे किसी अज्ञात वाहन ने टक्कर मार दी। इस टक्कर में जयवीर भजीते व मोटरसाइकिल सहित सड़क पर जा गिरा। बाद में राहगीरों द्वारा दोनों घायलों को अस्पताल भिजवाया गया। जहां चिकित्सकों ने जयवीर को मृत घोषित कर दिया। इस घटना में उनके भतीजे को भी हल्की चोटें आई। सूचना मिलने पर पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए अस्पताल के शवगृह भिजवाया। मामले की जांच अधिकारी भावना ने बताया कि मृतक के पुत्र नवीन की शिकायत पर अज्ञात वाहन चालक के खिलाफ मामला दर्ज किया गया है। पोस्टमार्टम के बाद शव परिजनों को सौंप दिया गया है।

करंट की चपेट में आने से गई जान

झज्जर। गांव सेहलंगा में खेतों में कार्य करते समय करंट की चपेट में आने से किसान की मौत हो गई। उसकी पहचान करीब 50 वर्षीय रविंद्र पुत्र उमेद सिंह के तौर पर हुई है। शुक्रवार को रविंद्र खेत में काम करने गया था। इसी दौरान जब लाइन बदल रहा था तो करंट की चपेट में आ गया। जब देर तक रविंद्र घर नहीं लौटा तो परिजन उसे देखने के लिए खेत में पहुंचे जहां रविंद्र बेसुध पड़ा था। इसके बाद डायल 112 से पुलिस को सूचना दी गई। पुलिस उसे नागरिक अस्पताल लाया गया। जहां चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया। मामले के जांच अधिकारी पवन कुमार ने बताया कि मृतक के चचेरे भाई सुधीर के बयान पर इत्तिफाकिया कार्रवाई अमल में लाई गई है।

किड्स एथलेटिक्स प्रतियोगिता

झज्जर। पुलिस लाइन मैदान में आयोजित दूसरी जिला किड्स एथलेटिक्स प्रतियोगिता में तीन सौ से अधिक खिलाड़ियों ने विभिन्न स्पर्धाओं में अपना खेल कौशल दिखाया। इस दौड़ में भागीदारी करते खिलाड़ी।

वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता का हुआ समापन

लंबी कूद प्रतियोगिता में जतिन ने प्रथम, रोशन कुमार ने द्वितीय रहा

बहादुरगढ़। सूर्या रोशनी लिमिटेड बहादुरगढ़ में आयोजित वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता का भव्य समापन हुआ। इसमें नरेश सिंगल, आशीष अग्रवाल, नीरज गुप्ता, एनके सिंगला तथा सीएस शर्मा मुख्य रूप से उपस्थित रहे। अतिथियों ने विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार व प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया। प्रतियोगिता में विभिन्न खेलों का आयोजन किया गया। जिसमें कर्मचारियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। वॉलीबॉल प्रतियोगिता में पाइप मील ने प्रथम स्थान प्राप्त किया जबकि थ्रेडिंग यूनिट द्वितीय स्थान पर रही। रस्साकस्सी प्रतियोगिता में पाइप मील ने प्रथम, सीआर यूनिट ने द्वितीय और एआरओ यूनिट ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। लंबी कूद प्रतियोगिता में जतिन ने प्रथम, रोशन कुमार ने द्वितीय तथा नीरज ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

कार्यक्रम | **संस्कारम पब्लिक स्कूल खातीवास में पीटीएम आयोजित**

वर्किंग साइंस मॉडल्स रहा आर्कषण का केंद्र

अभिभावकों ने न केवल योगात्मक मूल्यांकन के प्रदर्शन को समझा

हरिभूमि न्यूज ▶▶| झज्जर

संस्कारम पब्लिक स्कूल खातीवास में नर्सरी से 12वीं कक्षा तक के विद्यार्थियों के लिए पेरेंट्स-टीचर मीटिंग का आयोजन किया गया। मीटिंग का प्राथमिक उद्देश्य योगात्मक मूल्यांकन-एक के परीक्षा परिणामों को जारी करना रहा। जहां शिक्षकों ने प्रत्येक अभिभावक के साथ व्यक्तिगत रूप से मुलाकात की और विद्यार्थियों की अंक तालिका सौंपते हुए उनके मजबूत पक्षों और सुधार की आवश्यकता वाले क्षेत्रों पर विस्तार से चर्चा की। शिक्षकों ने अगले सत्र के लिए व्यक्तिगत शिक्षण योजनाएं और गृह-अध्ययन को उपयोगी सुझाव साझा किए, ताकि बच्चे अपनी पूरी क्षमता को हासिल कर सकें।

झज्जर। मॉडल्स के बारे में जानकारी लेते हुए विद्यार्थी। फोटो :हरिभूमि

साइंस मॉडल्स की जीवंत प्रदर्शनी रही

अभिनव मॉडल्स को देखकर बच्चों के व्यावहारिक ज्ञान और रचनात्मकता की भी खूब सराहना की

मीटिंग का मुख्य आकर्षण परिसर में विद्यार्थियों द्वारा बनाए गए वर्किंग साइंस मॉडल्स की जीवंत प्रदर्शनी रही। विद्यार्थियों ने रोबोटिक्स, ऊर्जा संरक्षण और पर्यावरण विज्ञान जैसे विषयों पर आधारित क्रियाशील मॉडल प्रस्तुत कर अपनी वैज्ञानिक प्रतिभा का प्रदर्शन किया। अभिभावकों ने न केवल योगात्मक मूल्यांकन के प्रदर्शन को समझा, बल्कि इन अभिनव मॉडल्स को देखकर बच्चों के व्यावहारिक ज्ञान और रचनात्मकता की भी खूब सराहना की। इसके अलावा संस्कारम हॉस्पिटल एंड ट्रॉमा सेंटर द्वारा सभी अभिभावकों और शिक्षकों के लिए एक मुफ्त स्वास्थ्य जांच शिविर का भी आयोजन किया गया। जिसमें अभिभावकों और शिक्षकों के स्वास्थ्य की जांच की गई। संस्कारम ग्रुप के चेयरमैन महिपाल ने भी अभिभावकों के साथ सीधे सकारात्मक संवाद स्थापित किया। उन्होंने शिक्षा के महत्व पर जोर देते हुए कहा कि वर्तमान चुनौतीपूर्ण समय में केवल किताबी ज्ञान ही काफी नहीं है, बल्कि चरित्र निर्माण, नैतिक मूल्यों और समग्र व्यक्तित्व विकास पर ध्यान देना भी अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने अभिभावकों को आश्वस्त किया कि स्कूल बच्चों को भविष्य की चुनौतियों के लिए पूरी तरह तैयार करने के लिए प्रतिबद्ध है।

स्टेप अप एसआईपी : बच्चे की पूरी पढ़ाई फ्री, फिर भी 50 लाख बचेंगे

भविष्य | बिजनेस डेस्क

अगर आपको भी बच्चे की पढ़ाई और अन्य खर्च से समय रहते मुक्ति पानी है तो आपके लिए स्टेप अप एसआईपी एक अहम निवेश का विकल्प साबित हो सकती है। इसके जरिये निवेश करने से आपको बड़ी राहत मिलेगी। स्कूल की बढ़ती फीस और हायर एजुकेशन की चिंता अक्सर अभिभावकों को सताती हैं। निवेश के जानकारों का कहना है कि समय रहते इस पर ध्यान दिया जाए तो इस टेंशन को 'बाय-बाय' कहा जा सकता है। इसके लिए आपको एसआईपी के जरिये निवेश करना होगा और इसे बढ़ाते जाना होगा। यह योजना आपके बच्चे की शिक्षा का खर्च उठा सकती है। साथ ही, बच्चे के 22 साल का होने तक आपके पास 50 लाख रुपये से ज्यादा बच सकते हैं। इसके लिए आपको बच्चे के जन्म से हर महीने 10,000 रुपये की एसआईपी शुरू करनी होगी। इसे 10 साल तक हर साल 10% बढ़ाना होगा। 10 साल बाद कॉन्ट्रिब्यूशन बंद कर देना है। फिर बच्चे की 10 से 22 साल की उम्र तक हर महीने 25,000 रुपये निकालने हैं। यह सब बिना किसी एजुकेशन लोन के संभव है।

यह दिया सुझाव

99% माता-पिता बिना किसी स्कीम के स्कूल फीस पर लाखों रुपये खर्च करते हैं। 'क्या हो अगर 10 साल की एसआईपी आपके बच्चे की शिक्षा को लगभग मुफ्त में फंड कर सके... और फिर भी उनके सपनों के लिए लाखों छोड़ जाए?' उन्होंने एक स्टेप-अप एसआईपी स्ट्रैटेजी का सुझाव दिया है। यह स्ट्रैटेजी महंगे एजुकेशन लोन की जगह ले सकती है। यह लंबी अवधि की वित्तीय योजना है।

कैसे काम करती है स्कीम?

यह योजना इस तरह काम करती है। जब आपका बच्चा पैदा हो तब हर महीने 10,000 रुपये की एसआईपी शुरू करें। अगले 10 सालों तक हर साल एसआईपी की राशि को 10% बढ़ाएं। 10 साल पूरे होने के बाद एसआईपी में पैसा डालना बंद कर दें। जब बच्चा 10 साल का हो जाए तब से 22 साल का होने तक हर महीने 25,000 रुपये निकालें। यह पैसा बच्चे की फीस के लिए होगा। इस योजना में 12% सीएजीआर (चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि दर) मानी गई है।

क्या है पूरा गणित?

निवेश के गणित के अनुसार, आप 10 साल में कुल 19.12 लाख रुपये का निवेश करेंगे। तब तक यह राशि बढ़कर 32.69 लाख रुपये हो जाएगी। अगले 12 सालों में आप एजुकेशन के लिए कुल 36 लाख रुपये निकालेंगे। इसके बावजूद आपके खाते में 51 लाख रुपये बचे रहेंगे। उन्होंने कहा, 'पैसे निकालते समय भी कंपाउंडिंग काम करती है।' इसका मतलब है कि बचा हुआ पैसा बढ़ता रहता है। इससे भुगतान के दौरान भी धन बढ़ता रहेगा।

दंग कर देने वाले रिजल्ट

इस योजना की तुलना एजुकेशन लोन से करें। 36 लाख रुपये के एजुकेशन लोन पर 11% ब्याज दर से 10 साल के लिए ईएमआई लगभग 50,000 रुपये प्रति माह होगी। यह एसआईपी से निकाली गई राशि से दोगुना है। इसमें ब्याज का भारी बोझ भी होता है। कौशिक ने कहा कि यह रणनीति आपकी आय वृद्धि से मेल खाती है। उन्होंने बताया, '10 हजार रुपये महीने से शुरू करें और 10वें साल तक आप सालाना 2.8 लाख रुपये का निवेश कर रहे होंगे जो प्रमोशन और वेतन वृद्धि के अनुरूप है।' उनके कुछ सुझाव भी हैं। कम लागत वाले इंडेक्स फंड का उपयोग करें। आपात स्थितियों के लिए हमेशा कुछ लिक्विडिटी बनाए रखें। अपनी प्रगति की सालाना समीक्षा करते रहें। उन्होंने निष्कर्ष निकाला, '10 साल के लिए एक अनुशासित, स्टेप-अप एसआईपी एक दशक के ओवरटाइम से कहीं ज्यादा कर सकती है।' यह तनाव-मुक्त और स्मार्ट कंपाउंडिंग का तरीका है।

निवेश मंत्रा | बिजनेस डेस्क

100 रुपये प्रॉफिट कमाने के बाद 100 रुपये गंवाने पर भी चुकाने होंगे 30 रुपये

क्रिप्टो नहीं, टैक्स का मायाजाल पैसे गंवाए तो भी देना होगा कर

- सीए ने निवेशकों को बताया क्रिप्टोकरेंसी से होने वाले नफे-नुकसान का गणित
- क्रिप्टोकरेंसी में निवेश करते हैं तो इस पर लगने वाले टैक्स के बारे में भी जान लें

अगर आप बाजार में शॉर्ट टर्म निवेश करना चाहते हैं तो आपके कुछ स्कीम बाजार में मौजूद हैं। इनमें रिटर्न भी बढ़िया मिलता है इसे लिक्विड फंड के नाम से जाना जाता है। ऐसे निवेश में पैसा उन सिक्योरिटीज में निवेश करते हैं, जिनकी मैच्योरिटी 91 दिनों से अधिक नहीं होती है। निवेशकों का पैसा इसके जरिए मनी मार्केट, शॉर्ट टर्म कॉरपोरेट डिपॉजिट और ट्रेजरी में लगाया जाता है।

देश में कई सालों से लोग क्रिप्टोकरेंसी में निवेश कर रहे हैं। कई तो इससे मोटा मुनाफा भी कमा चुके हैं और कई अपनी जमापूंजी गंवा चुके हैं। लेकिन अब सरकार ने क्रिप्टोकरेंसी में निवेश के नियम कड़े कर दिए हैं। क्रिप्टोकरेंसी में होने वाली कमाई पर 30 फीसदी का टैक्स लगता है। खास बात यह है कि आपने क्रिप्टोकरेंसी में 100 रपये का प्रोफिट कमाया और बाद में उसे इसी एसेट्स में गंवा दिया तो भी आपको 30 रुपये टैक्स देना होगा। पिछले कुछ सालों में क्रिप्टोकरेंसी में निवेश का चलन काफी तेजी से बढ़ा है। वहीं पिछले साल डोनाल्ड ट्रंप ने अमेरिकी राष्ट्रपति का चुनाव जीता था। तब से क्रिप्टो में और तेजी देखने को मिली है। इसे देखते हुए अब काफी भारतीय बिटकॉइन, इथेरियम, बाइनेंस, डॉगकॉइन आदि क्रिप्टोकरेंसी में निवेश करने लगे हैं। चूंकि क्रिप्टोकरेंसी पर किसी भी सरकार का केंद्रीय बैंक का कंट्रोल नहीं है, ऐसे में इसमें होने वाले प्रॉफिट पर भारत में टैक्स से जुड़े नियम काफी सख्त हैं। दरअसल, क्रिप्टोकरेंसी में टैक्स का नियम कुछ ऐसा है कि इसमें पैसे कमाने पर ही नहीं बल्कि पैसे गंवाने पर भी इनकम टैक्स चुकाना पड़ सकता है। फिर चाहे आपका पूरा पोर्टफोलियो घाटे में ही क्यों ना चल रहा हो। भारत के सख्त क्रिप्टो टैक्स नियमों के तहत, निवेशकों को हर रुपये के मुनाफे पर फ्लैट 30% टैक्स देना होता है, भले ही कुल मिलाकर नुकसान हुआ हो। एक्सपर्ट का कहना है कि यह सिस्टम दुनिया के सबसे कठोर नियमों में से एक है, जिससे भारतीय क्रिप्टो निवेशकों को राहत मिलने की गुंजाइश बहुत कम है। इस टैक्स सिस्टम को लेकर एक चार्टर्ड अकाउंटेंट (सीए) ने अपनी राय रखी और क्रिप्टोकरेंसी निवेशकों को अगाह किया है कि इसमें सोच समझकर ही निवेश करें, वरना यह घाटे का सौदा हो सकता है।

क्रिप्टो टैक्सेशन की बताई सच्चाई

एक सीए ने सोशल मीडिया पर क्रिप्टो टैक्सेशन की सच्चाई बताई है। उन्होंने पोस्ट के जरिए मैसेज दिया है कि भले ही आपने क्रिप्टो में 100 रुपये गंवाए हों, आपको 30 रुपये टैक्स के रूप में चुकाने पड़ सकते हैं। उन्होंने समझाया कि मान लीजिए कि आपने एक ही वित्तीय वर्ष में बिटकॉइन पर 100 रुपये का मुनाफा कमाया, लेकिन इथेरियम पर 200 रुपये का नुकसान उठाया। किसी भी दूसरे निवेश में आपको कुल 100 रुपये का नुकसान होता। लेकिन क्रिप्टो में ऐसा नहीं है। बिटकॉइन से हुई 100 रुपये की कमाई पर आपको 30% यानी 30 रुपये टैक्स के रूप में चुकाने होंगे। फिर इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि इथेरियम या किसी दूसरी क्रिप्टो से आपको कितना नुकसान हुआ है। ऐसे में आपको कुल 130 रुपये की चपत लगेगी।

क्या है क्रिप्टो से जुड़े नियम

- आयकर अधिनियम की धारा 115बीबीएच के तहत क्रिप्टो एसेट्स के लिए कुछ खास और कड़े नियम हैं।
- नुकसान की भरपाई नहीं (आप एक क्रिप्टो नुकसान को दूसरे मुनाफे से नहीं काट सकते)।
- नुकसान आगे नहीं ले जा सकते (इसे समायोजित नहीं कर सकते)।
- अधिग्रहण की लागत को छोड़कर कोई कटौती नहीं।
- ट्रेडिंग फीस जैसे चार्ज भी नहीं घटाए जाते
- इथेरियम पर 200 रुपये के नुकसान को अनदेखा कर दिया जाएगा और बिटकॉइन पर हुए 100 रुपये के मुनाफे पर 30% यानी 30 रुपये टैक्स देना होगा।
- कुल मिलाकर 130 रुपये का नुकसान होगा। यहां तक कि ट्रेडिंग फीस, गैस चार्ज, माइनिंग की लागत, या एक्सचेंज कमीशन जैसी चीजें आपके टैक्सेबल मुनाफे से नहीं घटाई जा सकतीं।

क्या है क्रिप्टोकरेंसी

क्रिप्टोकरेंसी एक डिजिटल या वर्चुअल मुद्रा है जो कंप्यूटर नेटवर्क पर सुरक्षित और विकेंद्रीकृत तरीके से काम करती है। यह पारंपरिक मुद्राओं की तरह नहीं है, जो सरकारों द्वारा नियंत्रित और जारी की जाती हैं।

विशेषताएं

1. विकेंद्रीकृत : क्रिप्टोकरेंसी किसी एक केंद्रीय प्राधिकरण द्वारा नियंत्रित नहीं होती है।
2. डिजिटल : यह पूरी तरह से डिजिटल रूप में मौजूद होती है।
3. क्रिप्टोग्राफी : सुरक्षा के लिए क्रिप्टोग्राफिक तकनीकों का उपयोग किया जाता है।
4. ब्लॉकचेन : अधिकांश क्रिप्टोकरेंसी ब्लॉकचेन तकनीक पर आधारित होती हैं।
5. सीमित आपूर्ति : कई क्रिप्टोकरेंसी की आपूर्ति सीमित होती है।

प्रमुख क्रिप्टोकरेंसी

1. बिटकॉइन : पहली और सबसे प्रसिद्ध क्रिप्टोकरेंसी।
2. एथेरियम : स्मार्ट कॉन्ट्रैक्ट्स के लिए जानी जाती है।
3. रिपल : अंतर्राष्ट्रीय भुगतान के लिए उपयोग।
4. लाइटकॉइन : बिटकॉइन का एक वैकल्पिक।
5. कार्डानो : शोध-आधारित ब्लॉकचेन प्लेटफॉर्म।

उपयोग

1. डिजिटल भुगतानः ऑनलाइन लेनदेन के लिए।
2. निवेशः कई लोग क्रिप्टोकरेंसी में निवेश करते हैं।
3. विकेंद्रीकृत अनुप्रयोग : एथेरियम जैसे प्लेटफॉर्म पर।
4. सीमापार लेनदेनः पारंपरिक तरीकों की तुलना में तेज और सस्ता।

जोखिम

1. अस्थिरताः कीमतें बहुत तेजी से बदल सकती हैं।
2. सुरक्षा जोखिमः हैकिंग और चोरी का खतरा।
3. नियामक अनिश्चितताः विभिन्न देशों में नियम अलग-अलग हैं।
4. घोटालेः फ्रॉड और स्कैम का खतरा।
5. तकनीकी जोखिमः तकनीकी समस्याएं आ सकती हैं।

दिवाली बोनस का करें सही इस्तेमाल कर सकते हैं अपने लिए बड़ी बचत

म्यूचुअल फंड्स, रिटायरमेंट प्लान या कर्ज चुकाने में लगाएं, जरूरतों के लिए 30%, इच्छाओं के लिए- 30%, वेल्थ बनाने के लिए-40% प्रयोग करें

तोहफा | बिजनेस डेस्क

दिवाली को महज कुछ दिन ही शेष बचे हैं। ऐसे में हर साल दिवाली पर ज्यादातर कंपनियां अपने कर्मचारियों को बोनस देती हैं। यह बोनस हमारे लिए खुशियों का तोहफा भी होता है, साथ ही अपनी आर्थिक स्थिति को बेहतर बनाने का मौका भी। हालांकि अक्सर होता यह है कि जैसे ही बोनस हाथ में आता है, हम शॉपिंग, नई चीजें खरीदने और शौक पूरे करने में पैसा खर्च कर देते हैं। ऐसे में यह जानना जरूरी है कि इस पैसे का स्मार्ट उपयोग क्या हो सकता है। इसका आप कहां सही इस्तेमाल कर सकते हैं। कैसे अपनी वेल्थ बना सकते हैं या कर्ज उतार सकते हैं।

स्मार्ट तरीके से बांटें : सही बैलेंस बनाएं

बोनस को खर्च करने का सबसे अच्छा तरीका ये है कि इसे दो हिस्सों में बांट लें-एक हिस्सा त्योहार मनाने के लिए और दूसरा भविष्य की जरूरतों के लिए। बाजार के जानकारों के अनुसार बोनस का 50% हिस्सा त्योहार और लाइफस्टाइल पर खर्च करें और बाकी 50% म्यूचुअल फंड्स, रिटायरमेंट या कर्ज चुकाने जैसे लॉन्ग-टर्म गोल्स के लिए रखें। अगर आपके ऊपर ज्यादा जिम्मेदारियां हैं, तो तीन हिस्सों में बांट सकते हैं। जैसेः-

- जरूरतों के लिए- 30%
- इच्छाओं के लिए- 30%
- वेल्थ बनाने के लिए- 40%

जिंदगी के स्टेज के हिसाब से बांटें।

इसे बांटने का हर किसी का तरीका अलग हो सकता है। 'अपने बोनस को अपनी जिंदगी के स्टेज के हिसाब से बांटें। अगर आपके ऊपर हाई-इंटरेस्ट कर्ज है, तो 60-70% बोनस उसको चुकाने में लगाएं।'

"'बोनस को बांटने की प्रक्रिया में परिवार को जरूर शामिल करें, ताकि हर कोई मस्ती और अनुशासन के बीच बैलेंस समझे।' इस तरह समझदारी से खर्च और स्मार्ट निवेश के साथ आपका दिवाली बोनस न सिर्फ त्योहार को खास बनाएगा, बल्कि आपके भविष्य को भी बेहतर बनाने के काम आ सकता है।

सेलिब्रेशन के लिए बजट बनाएं

त्योहार की खुशी फाइनेंशियल टेंशन में न बदल जाए इसके लिए सही बजट बनाना जरूरी है। 'पहले अंदाजा लगाएं कि त्योहार में कितना खर्च होगा-गिफ्ट्स, घूमने-फिरने, सजावट, ट्रैवल और धार्मिक रस्मों पर।' इस खर्च को अपने बोनस और रेगुलर इनकम के साथ मिलाकर देखें। इससे आपको एक फिक्स्ड बजट मिलेगा और आप बाकी पैसों को पहले ही निवेश में डालकर अपने गोल्स को प्रायोरिटी दे सकते हैं।

स्मार्ट तरीके से सेलिब्रेट करें

त्योहारों में ओवरस्पेंडिंग का खतरा हमेशा रहता है। 'बोनस को 'एक्स्ट्रा' पैसा समझकर फूंक न दें।' क्रेडिट कार्ड या पर्सनल लोन लेकर शॉपिंग करना तो बिल्कुल अवॉइड करें, क्योंकि इनके इंटरेस्ट रेट्स बहुत ज्यादा होते हैं और ये कर्ज के जाल में फंसा सकते हैं। बिना कर्ज के सेलिब्रेशन के लिए क्रिएटिव तरीके अपनाएं। 'पॉटलक गैदरिंग्स करें, दीया डेकोरेशन बनाएं या अर्ली-बर्ड ट्रैवल डील्स का फायदा उठाएं।'

हाई-इंटरेस्ट कर्ज चुकाएं

अपने बोनस का कुछ हिस्सा क्रेडिट कार्ड के बिल, पर्सनल लोन या किसी भी हाई-इंटरेस्ट कर्ज को चुकाने में लगाएं। इससे भविष्य में आपका पैसा बचेगा। 'सबसे पहले अपने कर्ज की लिस्ट बनाएं, सबसे ज्यादा इंटरेस्ट वाले कर्ज को पहले चुकाएं। यहां तक कि आंशिक पेमेंट भी लोन की अवधि और टोटल इंटरेस्ट को कम कर सकता है।' अगर आपके पास महंगा कर्ज है, तो नए निवेश से पहले इसे चुकाना प्रायोरिटी होनी चाहिए।

निवेश की स्ट्रैटजी

निवेश के लिए ऑप्शन्स आपकी जरूरतों पर निर्भर करते हैं। '3 साल से कम की अवधि के लिए लिक्विड फंड्स या रिकरिंग डिपॉजिट्स में निवेश करें। मीडियम से लॉन्ग-टर्म के लिए डायवर्सिफाइड इक्विटी म्यूचुअल फंड्स या इंडेक्स फंड्स चुनें।' अपने पोर्टफोलियो में डायवर्सिफिकेशन के लिए सोवरेन गोल्ड बॉन्ड्स या गोल्ड ईटीएफ भी जोड़ सकते हैं। महत्वपूर्ण है कि रिटर्न और लिक्विडिटी में बैलेंस बनाएं, ताकि आपका शॉर्ट-टर्म पैसा रिस्क में न आए। दिवाली बोनस आपके फाइनेंशियल गोल्स को तेजी से पूरा करने का मौका है। 'बोनस या तो एक हफ्ते की शॉपिंग में खत्म हो सकता है या सालों तक आपके लिए काम कर सकता है। इसे फाइनेंशियल फिटनेस का बूस्टर समझें।'

'फंड ऑफ फंड्स' में करें निवेश, दोनों हाथों में रहेंगे लड्डू

बिजनेस डेस्क

सोना और चांदी की कीमत इस समय रॉकेट की रफ्तार से भाग रही है। वहीं, फेस्टिव सीजन के कारण इसकी कीमत में और तेजी आ सकती है। अगर आप धनतेरस पर सोना और चांदी दोनों में निवेश करना चाहते हैं तो ' कॉम्बो फंड ऑफ फंड्स ' एक बेहतरीन ऑप्शन हो सकते हैं। दरअसल, इस समय म्यूचुअल फंड कंपनियां निवेशकों को दोनों धातुओं में आसानी से निवेश करने का मौका दे रही हैं। इसके लिए वे डुअल-एसेट पैसिव फंड्स (ऐसे फंड जो सोने और चांदी दोनों में निवेश करते हैं) लॉन्च कर रही हैं। पिछले दो साल में सोने की कीमत करीब दोगुनी हो गई है। वहीं, औद्योगिक मांग और सप्लाई में कमी के कारण चांदी भी तेजी से बढ़ रही है। ऐसे में निवेशक महंगाई से बचने और अपने पोर्टफोलियो को मजबूत करने के लिए गोल्ड और सिल्वर फंड ऑफ फंड्स (एफओएफ) की ओर रुख कर रहे हैं।

अलग-अलग निवेश की जरूरत नहीं

डुअल-एसेट पैसिव फंड्स में निवेश के बाद सोना और चांदी, दोनों में अलग-अलग निवेश करने की जरूरत नहीं पड़ती। यानी आप फिजिकल सोना-चांदी खरीदे या अलग-अलग ईटीएफ में निवेश किए बिना दोनों की तेजी का फायदा उठा सकते हैं। इस नई कैटेगरी में चार बड़े फंड्स सामने आए हैं। इनमें कोटक गोल्ड सिल्वर पैसिव एफओएफ, मिराए एसेट गोल्ड सिल्वर पैसिव एफओएफ, एडलवाइस गोल्ड एंड सिल्वर ईटीएफ एफओएफ और मोतीलाल ओसवाल गोल्ड एंड सिल्वर ईटीएफ एफओएफ शामिल हैं।

1. कोटक गोल्ड सिल्वर पैसिव एफओएफ

- यह फंड 20 अक्टूबर 2025 तक सब्सक्रिप्शन के लिए खुला है। निवेशक सिर्फ 100 से निवेश शुरू कर सकते हैं।
- इसका मकसद कोटक गोल्ड ईटीएफ और कोटक सिल्वर ईटीएफ में निवेश करके लंबी अवधि में अच्छा रिटर्न कमाना है।
- यह एफओएफ एक खास क्वांटिटेटिव मॉडल का इस्तेमाल करता है। यह मॉडल सोने और चांदी की कीमतों के उतार-चढ़ाव के आधार पर अपने आप तय करता है कि किस धातु में कितना पैसा लगाना है।

2. मिराए एसेट गोल्ड सिल्वर पैसिव एफओएफ

इस फंड में शुरुआत में 50:50 का आवंटन होता है, लेकिन सोने-चांदी के अनुपात (गोल्ड-सिल्वर रेश्यो) व महंगाई, ग्लोबल ब्याज दरें, डॉलर की मजबूती जैसे बड़े आर्थिक संकेतकों के आधार पर यह अनुपात बदलता रहता है। इस फंड का एक्सपेंस रेशियो 0.18% है और 7 अक्टूबर 2025 तक इसका एयूएम (एसेट्स अंडर मैनेजमेंट- फंड में कुल जमा राशि) 67 करोड़ रुपये था।

3. एडलवाइस गोल्ड एंड सिल्वर ईटीएफ एफओएफ

यह फंड सितंबर 2022 में लॉन्च हुआ था। यह भारत का सबसे पुराना डुअल-मेटल फंड है और हाल के दिनों में धातुओं की तेजी से इसने काफी फायदा उठाया है। इसमें 500 रुपये से निवेश शुरू कर सकते हैं। यह फंड सोने और चांदी में लगभग बराबर हिस्सेदारी रखता है यानी 49.98% सोने में और 49.83% चांदी में। फंड ने पिछले एक साल में 57.9% का रिटर्न दिया है और पिछले तीन सालों में सालाना 31.97% का रिटर्न दिया है।

4. मोतीलाल ओसवाल गोल्ड एंड सिल्वर ईटीएफ एफओएफ

यह फंड अक्टूबर 2022 में लॉन्च हुआ था और इसने पिछले दो सालों में एक मजबूत ट्रैक रिकॉर्ड बनाया है। यह फंड 69.34% आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल गोल्ड ईटीएफ में और 30.17% निप्पॉन इंडिया सिल्वर ईटीएफ में निवेश करता है। इसका एयूएम 244.32 करोड़ रुपये है, एक्सपेंस रेशियो 0.15% है और कोई एग्जिट लोड नहीं है। फंड ने पिछले एक साल में 59.7% का रिटर्न दिया है। वहीं पिछले दो सालों में सालाना 18.1% का सीएजीआर व पिछले तीन सालों में सालाना 11.6% का रिटर्न दिया है।

एफडी साइलेंट वेल्थ ट्रैप, सिर्फ इससे ही नहीं बन पाओगे अमीर दूसरे विकल्पों पर भी दें ध्यान

सुझाव | बिजनेस डेस्क

अगर आप फिक्स्ड डिपॉजिट (एफडी) में निवेश को ही असली निवेश समझते हैं तो आप गलत हो सकते हैं। एक एक्सपर्ट ने एफडी में निवेश को 'साइलेंट वेल्थ ट्रैप' बताया है। यानी एक ऐसा जाल जिसमें आप अमीर बनने के लिए जाते हैं, लेकिन अंत में फंस जाते हैं। क्योंकि सिर्फ एफडी में निवेश करके अमीर नहीं बना जा सकता। एक्सपर्ट ने इसका कारण भी बताया है। जानकारों का कहना है कि बड़ा फंड बनाने के लिए सिर्फ एफडी में निवेश करना सही नहीं है। उन्होंने उन लोगों को भी चेतावनी दी है जो एफडी में निवेश को ही असली निवेश समझ लेते हैं। वह बताते हैं कि यह जाल तब बनता है जब लोग अपना ज्यादातर पैसा एफडी में रखते हैं। वे महंगाई के असर और पैसे बढ़ाने के मौकों को नजरअंदाज कर देते हैं। एफडी में आपका पैसा तो सुरक्षित रहता है, लेकिन आपको रिटर्न बेहद कम मिलता है। इसलिए सिर्फ एफडी के भरोसे नहीं रहें। निवेश के लिए एसआईपी जैसे विकल्प भी तलाशे।

निवेश के लिए एसआईपी जैसे विकल्प भी तलाशें, तभी बढ़ा पाएंगे पैसा

यह मिलता है ब्याज

आज एफडी की सालाना दरें लगभग 6.3% से 7% हैं, जबकि महंगाई करीब 2.1% है। आपकी असली कमाई लगभग 4.2 से 4.9% प्रति वर्ष है।' अगर आप 10 लाख रुपये एफडी में रखते हैं, तो एक साल बाद उसकी असली खरीदने की ताकत सिर्फ 10.42 लाख रुपये ही रह जाती है। इसका मतलब है कि आपका पैसा असल में बहुत कम बढ़ता है।

लोगों को एफडी पर भरोसा क्यों

भारत के लगभग 70% परिवार अभी भी एफडी को ही अपनी बचत का मुख्य जरिया मानते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि लोगों को इसमें पैसे की पूरी सुरक्षा का भरोसा मिलता है। साथ ही, उन्हें पैसे के लेन-देन की कम जानकारी होती है और वे बाजार के उतार-चढ़ाव से डरते हैं।

यह दी चेतावनी

उन्होंने चेतावनी दी कि सुरक्षा का यह भरोसा तभी तक सही है जब तक महंगाई कम रहती है। उन्होंने लिखा कि अगर महंगाई आपकी एफडी से मिलने वाले रिटर्न से ज्यादा हो जाती है तो आपकी असली दौलत कम होने लगती है। उन्होंने जोर देकर कहा कि वित्तीय सुरक्षा लापरवाही से नहीं, बल्कि निवेश को अलग-अलग जगह बांटने से मिलती है।

निवेश का तरीका बताया

एक संतुलित निवेश का तरीका सुझाया। इसमें फिक्स्ड डिपॉजिट के साथ शेयर बाजार (जिसने पहले 12 से 15% सीएजीआर का रिटर्न दिया है), डेट फंड (6.5 से 8%) और महंगाई से बचाने वाले निवेश जैसे सोना या आरईआईटीएस को शामिल करना चाहिए। उन्होंने सलाह दी कि अपने निवेश को एक ही जगह न रखकर अलग-अलग जगह बांटें।

ये हैं निवेश के विकल्प

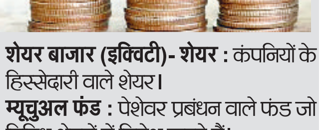

1. **शेयर बाजार (इक्विटी)- शेयर :** कंपनियों के हिस्सेदारी वाले शेयर।
- **म्यूचुअल फंड :** पेशेवर प्रबंधन वाले फंड जो विविध शेयरों में निवेश करते हैं।
- **ईटीएफ (एक्सचेंज ट्रेडेड फंड):** शेयर बाजार में ट्रेड होने वाले फंड।

2. **फिक्स्ड इनकम निवेश- फिक्स्ड डिपॉजिट (एफडी):** बैंकों में निश्चित अवधि के लिए जमा।
- **बॉन्ड:** कंपनियों या सरकार द्वारा जारी कर्ज साधन।
- **डेब्ट म्यूचुअल फंड:** बॉन्ड और अन्य फिक्स्ड इनकम साधनों में निवेश।

ये हैं निवेश के विकल्प

3. **रियल एस्टेट- आवासीय संपत्ति :** घर या फ्लैट।
- **वाणिज्यिक संपत्ति :** ऑफिस, शॉपिंग कॉम्प्लेक्स।
- **आरईआईटी (रियल एस्टेट इनवेस्टमेंट ट्रस्ट):** रियल एस्टेट में निवेश के लिए ट्रेडेबल यूनिट्स।

4. **सोना और कीमती धातुएं-भौतिक सोना :** सिक्के, बार।
- **गोल्ड ईटीएफ :** सोने में निवेश के लिए एक्सचेंज ट्रेडेड फंड।
- **सॉवरेन गोल्ड बॉन्ड:** सरकार द्वारा जारी।

5. **म्यूचुअल फंड- इक्विटी फंड:** शेयर बाजार में निवेश।
- **हाइब्रिड फंड:** इक्विटी और डेट का मिश्रण।
- **डेब्ट फंड:** फिक्स्ड इनकम साधनों में निवेश।

6. पीपीएफ (पब्लिक प्रोविडेंट फंड)- लंबी अवधि की बचत योजना जो कर लाभ देती है।
7. एनपीएस (नेशनल पेंशन सिस्टम)- रिटायरमेंट के लिए पेंशन योजना।
8. यूएलआईपी (यूनिट लिंक्ड इंश्योरेंस प्लान)- निवेश और बीमा का मिश्रण।
9. क्रिप्टोकरेंसी- डिजिटल मुद्राएं जैसे बिटकॉइन, एथेरियम (उच्च जोखिम)।
10. एफडी और आरडी (रिकरिंग डिपॉजिट)- बैंकों में निश्चित आय के विकल्प।

खबर संक्षेप

दहेज उत्पीड़न मामले में एक गिरफ्तार

रेवाड़ी। पुलिस ने दहेज उत्पीड़न के मामले में एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। गत वर्ष विवाहिता की शिकायत के आधार पर पुलिस ने दोनों पक्षों के बीच सुलहनामा कराने के प्रयास किए थे। कई बार काउंसलिंग कराने के बाद भी बातचीत सिरे नहीं चढ़ी तो पुलिस ने 9 सितंबर को ससुराल पक्ष के लोगों के खिलाफ केस दर्ज कर लिया। जांच के बाद इस मामले में पुलिस ने राजस्थान के पनवाल निवासी उमेश कुमार को गिरफ्तार कर लिया। उसे तफ्तीश में शामिल करने के बाद पुलिस बेल पर छोड़ दिया गया।

सड़क हादसे का आरोपी चालक गिरफ्तार

रेवाड़ी। पुलिस ने सड़क हादसे के बाद फरार दो वाहन चालकों को गिरफ्तार किया है। कोसली थाना पुलिस ने 3 अक्टूबर को हुए हादसे के बाद फरार हुए चालक के खिलाफ केस दर्ज किया था। इस मामले में जांच के बाद पुलिस ने कारोली निवासी संजय को गिरफ्तार किया है। उसका ट्रैक्टर भी पुलिस ने कब्जे में ले लिया। इस हादसे में एक युवक की मौत

युवक ने संदिग्ध हालत में निगला जहर, हालत गंभीर

रेवाड़ी। बोहतवास अहीर में शुक्रवार की रात एक अमरूद के बाग में कार्यरत युवक ने संदिग्ध हालत में जहरीला पदार्थ खा लिया। उसे गंभीरावस्था में एक प्राइवेट अस्पताल में दाखिल कराया गया है। पुलिस जहर खाने के कारणों की जांच कर रही है।

आदर्श वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में अभिभावक-शिक्षक बैठक का आयोजन

बच्चे के विकास के दो प्रमुख स्तंभ हैं अभिभावक व शिक्षक

बैठक में नर्सरी से बारहवीं कक्षा तक के विद्यार्थियों के अभिभावकों ने सक्रिय भागीदारी निभाई

झज्जर। बैठक में उपस्थित शिक्षक एवं अभिभावक। फोटो :हरिभूमि

झज्जर। कार्यक्रम में उपस्थित शिक्षक। फोटो :हरिभूमि

हरिभूमि न्यूज ▶▶| झज्जर

आदर्श वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय दादनपुर में शनिवार को अभिभावक-शिक्षक बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में नर्सरी से बारहवीं कक्षा तक के विद्यार्थियों के अभिभावकों ने सक्रिय भागीदारी निभाई। शिक्षकों ने प्रत्येक अभिभावक से संवाद कर उनके बच्चों के परीक्षा परिणाम, अध्ययन के प्रति दृष्टिकोण, अनुशासन एवं कक्षा सहभागिता से संबंधित जानकारी सांझा की। कार्यक्रम की अध्यक्षता शिक्षा समिति सदस्या सीजू गहलावत ने की। विद्यालय और अभिभावक बच्चे के विकास के दो प्रमुख स्तंभ हैं। जब दोनों मिलकर कार्य करते हैं तो विद्यार्थियों की सफलता सुनिश्चित हो जाती है। बैठक में विद्यालय प्राचार्य जयप्रकाश यादव ने भी संबोधित किया।

बच्चों की शैक्षणिक रिपोर्ट ली

झज्जर। संस्कारम इंटरनेशनल स्कूल पाटौदा में शनिवार को अभिभावक-शिक्षक बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में संस्कारम समूह के चेयरमैन डॉक्टर महिपाल व स्कूल प्राचार्या श्वेता कौशिक ने अभिभावकों से संवाद करते हुए विद्यार्थियों की शैक्षणिक प्रगति पर चर्चा की। बैठक में शिक्षकों ने विद्यार्थियों की परीक्षा में प्राप्त अंकों और प्रदर्शन पर विस्तार से जानकारी दी तथा आगे की पढ़ाई के लिए सुझाव भी सांझा किए। अभिभावकों ने भी अपने विचार व्यक्त करते हुए विद्यालय के प्रयासों की सराहना की। चेयरमैन डॉक्टर महिपाल यादव ने कहा कि विद्यालय का उद्देश्य विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास की दिशा में निरंतर कार्य करना है। प्राचार्या श्वेता कौशिक ने अभिभावकों से अनुरोध किया कि वे घर पर भी अपने बच्चों को नियमित अध्ययन के लिए प्रेरित करें।

शिक्षकों को दी सक्रिय अध्ययन की जानकारी

झज्जर। एमआर स्कूल हसनपुर में सक्रिय अध्ययन विषय पर एक दिवसीय क्षमता संवर्धन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। शिक्षकों के व्यावसायिक विकास को सशक्त बनाने के उद्देश्य से आयोजित इस कार्यक्रम का शुभारंभ प्राचार्या संगीता कोडान ने उप प्राचार्या नेहा शर्मा के साथ दीप प्रज्ज्वलित करते हुए किया। उन्होंने कहा कि सक्रिय अध्ययन वर्तमान शिक्षा पद्धति का एक अभिन्न अंग है, जो विद्यार्थियों में न केवल ज्ञान का विकास करता है, बल्कि उन्हें विश्लेषणात्मक सोच, सहयोग, रचनात्मकता और समस्या-समाधान जैसे जीवनोपयोगी कौशल भी प्रदान करता है। कार्यक्रम में एचडी स्कूल साल्हावास की उप प्राचार्या नीलम जांगड़ा मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित रहीं। उन्होंने सक्रिय अध्ययन की विभिन्न शिक्षण तकनीकों पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। सहकारात्मक अधिगम, प्रश्नोत्तरी आधारित शिक्षण, प्रोजेक्ट कार्य एवं समस्या-आधारित शिक्षण तथा छात्र-केंद्रित गतिविधियों की जानकारी देते हुए उन्होंने प्रतिभागियों को सक्रिय शिक्षण विधियों को व्यवहार में लाने के लिए प्रेरित किया। विद्यालय निदेशक सोमबीर कोडान ने विद्यालय प्रबंधन समिति की तरफ से मुख्य वक्ता को स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया।

त्योहारी सीजन में साइबर ठगों से रहें सावधान

लुभावने ऑफर से बना सकते शिकार

- बिना जांच व परख के किसी भी क्यू आर कोड को स्कैन न करें

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रेवाड़ी

जिला पुलिस कप्तान हेमेंद्र कुमार मीणा ने कहा कि आज की डिजिटल दुनिया में साइबर क्रिमनल कम्यूटर तथा इंटरनेट के माध्यम से अलग-अलग तरीकें अपनाकर लोगों को लालच में फंसाकर उनके साथ ठगी को अंजाम दे रहे है। त्योहारी सीजन में भी साइबर ठग तरह-तरह के लुभावने ऑफर देकर आमजन को ठगी का शिकार बनाने की ताक में है, जिनसे नागरिकों को सतर्क व सावधान रहने की जरूरत है। इसलिए नागरिक बिना जांच व परख के किसी भी क्यू आर कोड को स्कैन न करे। साइबर ठगों की ओर से कई वेबसाइट पर लोगों के साथ धोखाधड़ी की जा रही है। जब नागरिक ओ-लेक्श वेबसाइट पर कोई भी पुरानी वस्तु, सामान खरीदते या बेचते है तो साइबर क्रिमिनल इसका फायदा उठाकर लोगों के साथ धोखाधड़ी करते है। एसपी ने बताया कि जब ओ-लेक्श वेबसाइट पर कोई पुरानी वस्तु बेचनी होती है तो वेबसाइट अपलोड करके अपना मोबाइल नंबर डाल देते है तो साइबर क्रिमनल मोबाइल नंबर पर कॉल करके गूगल-पे, फोन-पे तथा पेटीएम पर एक रुपया भेजकर पैसों की रिक्वेस्ट बनाकर भेज देते है।

साइबर क्राइम से बचने के उपाय

अपनी कोई भी पर्सनल इनफार्मेशन और अपनी बैंकिंग डिटेल्स किसी अनजान व्यक्ति के साथ शेयर न करे। ओ-लेक्श वेबसाइट पर पहले पैसे न भेजे। अगर आपको कोई चीज ओलेक्श पर कोई वस्तु खरीदनी है तो उसकी बिल्कुल भी ऑनलाइन पेमेंट न करें, घर पर आने के बाद ही उसकी पेमेंट करें। ओ-लेक्श वेबसाइट पर कोई वस्तु बेचने पर आपके द्वारा दिए गए विज्ञापन के सम्बन्ध कोई आपको कॉल करता है तो वह आपको आपके सामान की पूरी कीमत आपको ट्रांसफर करने के लिए कहता है, जिससे आप जल्दबाजी में उसकी बातो में आकर पूरी पेमेंट लेने के चक्कर में पेमेंट रिक्वेस्ट को एक्सेप्ट कर लेते है और फिर अपना पिन डालते है। आपको पिन नहीं डालने है। क्यू आर कोड को स्कैन न करे, क्योंकि उन्होंने पहले ही पेमेंट रिक्वेस्ट डाली होती हैं और ऐसे में पैसे कट सकते है। एसपी ने कहा कि जागरुकता से ही साइबर क्राइम से बचा सकता है। कोई भी किसी भी प्रकार की जॉब, विदेश भेजन व शादी कराने सहित किसी प्रकार के बहकावें में न आएं और न ही कोई पेमेंट करें। अगर फिर भी किसी प्रकार से ऑनलाइन धोखाधडी हो जाती है तो तुरंत राष्ट्रीय हेल्पलाइन नम्बर 1930 पर कॉल करें और साइबरक्राइम.जीओवी.इन पर अपनी शिकायत दर्ज कराएं। इसके अलावा साइबर क्राइम थाना या नजदीकी पुलिस स्टेशन में जाकर साइबर हेल्प डेस्क से मदद ले सकते है।

श्रद्धालु ने भागवत कथा का किया रसपान

कथा के समापन पर श्रद्धालुओं ने हवन में पूर्णाहुति डाली

हरिभूमि न्यूज ▶▶| झज्जर

झज्जर। कथा के समापन अवसर पर उपस्थित श्रद्धालु। फोटो :हरिभूमि

स्थानीय सैनी धर्मशाला में चल रही श्रीमद् भागवत कथा शनिवार को संपन्न हो गई। कथा के समापन पर श्रद्धालुओं ने हवन में पूर्णाहुति डाली।सीताराम गेट कालोनीवासियों के सहयोग से कराए इस आयोजन में कथा व्यास पुनीत महाराज सप्ताह भर तक श्रद्धालुओं को श्रीमद भागवत कथा का रसपान कराया। श्रद्धालु कविता सैनी ने बताया कि चार अक्टूबर को कलश शोभायात्रा के साथ श्रीमद् भागवत कथा की शुरूआत की गई थी। इस मौके पर अमित सैनी, शीला, अनीता, मोनू, रोहित, कमला, ऊषा, लता, नेहा, महक, मंजीत, लोकेश, लविश, पानवी, दिशा, भाविका, देव, सक्षम सहित अन्य भी उपस्थित रहे।

युकां ने की एसआईटी से जांच की मांग

बहादुरगढ़। निशित कटारिया और प्रदीप यादव।

बहादुरगढ़। वरिष्ठ आईपीएस अधिकारी पूरन कुमार की आत्महत्या पर दुख व्यक्त करते हुए हरियाणा युवा कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष निशित कटारिया और मीडिया चेयरमैन प्रदीप यादव ने कहा कि यह घटना पूरे प्रशासनिक तंत्र की पारदर्शिता और जवाबदेही पर भी गंभीर प्रश्न खड़े करती है। इस मामले की एचआईटी जांच सुप्रीम कोर्ट के सिटिंग जज की निगरानी में होनी चाहिए। निशित कटारिया और प्रदीप यादव ने कहा कि पूरी सच्चाई सामने आनी चाहिए। सरकार सुनिश्चित करे कि न्याय होता हुआ दिखे और दोषियों को कठोरतम सजा मिले। युवा कांग्रेस इस मुद्दे पर लगातार आवाज उठाएगी और सुनिश्चित करेगी कि निष्पक्ष और पारदर्शी जांच होने के साथ दोषियों को कानून के अनुसार कठोरतम सजा मिले। निशित कटारिया के अनुसार निष्पक्ष और स्वतंत्र जांच ही दोषियों को कड़ी सजा सुनिश्चित कर सकती है। प्रदीप यादव के अनुसार एफआईआर में दर्ज आरोप में जातिगत भेदभाव, उत्पीड़न और मानसिक प्रताड़ना शामिल हैं।

संत गुरु रविदास धर्मशाला में महासम्मेलन 16 नवंबर को

झज्जर। बैठक के दौरान उपस्थित समाज के प्रबुद्धजन। फोटो :हरिभूमि

झज्जर। स्थानीय संत गुरु रविदास धर्मशाला में भिवानी और झज्जर जिले के चमार समाज की जिला स्तरीय बैठक का आयोजन किया गया। बैठक की अध्यक्षता चमार फेडरेशन ऑफ इंडिया के प्रदेशाध्यक्ष राम नारायण चरखी ने की। इस दौरान अपने संबोधन में राज्य प्रभारी एडवोकेट सुनीता गोलपुरिया ने कहा कि चमार फेडरेशन ऑफ इंडिया अब तक हरियाणा के पांच जिलों भिवानी, दादरी, महेंद्रगढ़, रेवाड़ी और हिसार में जिला स्तरीय सम्मेलन आयोजित कर चुका है और आगामी झज्जर सम्मेलन ऐतिहासिक स्वरूप में आयोजित किया जाएगा। वहीं प्रदेशाध्यक्ष राम नारायण चरखी ने कहा कि फेडरेशन का मुख्य उद्देश्य समाज को शिक्षित, संगठित और सशक्त बनाना है। बैठक में सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि आगामी 16 नवंबर को झज्जर में जिला स्तरीय चमार समाज सम्मेलन आयोजित किया जाएगा।

स्कूल की मरम्मत के लिए दिया सहयोग

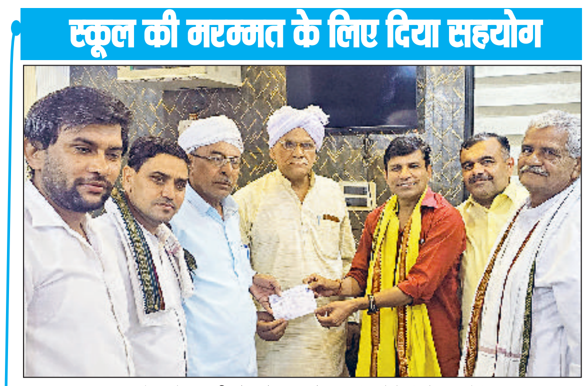

बहादुरगढ़। आसौदा के ग्रामीणों को सहयोग राशि देते दिनेश कौशिक।

बहादुरगढ़। शनिवार को आसौदा सिवान और आसौदा टोडरान ग्राम पंचायतों के प्रतिनिधियों ने भाजपा नेता दिनेश कौशिक से उनके सेक्टर-2 स्थित कार्यालय में मुलाकात की। इस दौरान इन प्रतिनिधियों ने गांव की समस्याओं और विकास कार्यों से संबंधित मुद्दों पर विस्तार से चर्चा की। संदीप और रवि ने बताया कि गांव के राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय की इमारत काफी जर्जर स्थिति में है और लंबे समय से मरम्मत की जरूरत है। विद्यार्थियों की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए ग्रामीण अब अपने स्तर पर मरम्मत कार्य शुरू कर चुके हैं, लेकिन सीमित संसाधनों के कारण उन्हें सहयोग की आवश्यकता है। ग्रामीणों की बात सुनने के बाद दिनेश कौशिक ने विद्यालय के सुधार कार्य के लिए 11 हजार और समाजसेवी कृष्ण पांचाल ने भी 11 हजार का सहयोग किया। कौशिक ने कहा कि शिक्षा समाज की प्रगति की आधारशिला है और गांव के स्कूलों में सुविधाओं की कमी नहीं रहने दी जाएगी। मरम्मत या सुधार कार्य में सरकार के स्तर पर हरसंभव सहयोग कराया जाएगा।

परनाला में वाल्मीकि धर्मशाला का निर्माण शुरू

- निर्माण कार्य की शुरुआत पूजा-अर्चना के साथ की गई

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बहादुरगढ़

बहादुरगढ़। गांव परनाला में धर्मशाला का निर्माण शुरू करवाते अशोक राठी। फोटो :हरिभूमि

गांव परनाला में शनिवार को ग्राम पंचायत की ओर से समाज हित में एक महत्वपूर्ण पहल करते हुए वाल्मीकि धर्मशाला के निर्माण कार्य की शुरुआत की गई है। सरपंच एसोसिएशन के प्रधान अशोक राठी के अनुसार इस धर्मशाला का निर्माण ग्रामीणों की लंबे समय से चली आ रही मांग पर किया जा रहा है। गांव की सरपंच मुकेश राठी के पति अशोक राठी ने बताया कि पंचायत ने बजट प्रावधान के तहत इस धर्मशाला के निर्माण की मंजूरी दी है। निर्माण कार्य की शुरुआत पूजा-अर्चना के साथ की गई। जिसमें पंचायत सदस्यों और स्थानीय निवासियों ने भाग लिया। करीब 100 गज में बनाई जा रही यह धर्मशाला न केवल धार्मिक और सामाजिक आयोजनों के लिए उपयोगी होगी बल्कि गांव में आने वाले मेहमानों को भी सुविधा प्रदान करेगी।

सभी वर्गों को लाभ मिलेगा

पंचायत की योजना है कि धर्मशाला में स्वच्छ पेयजल, बिजली, शौचालय और बैठने की आधुनिक व्यवस्था भी की जाए। जितेंद्र मेंबर, जोगी, तेजपाल मेंबर, कुक्कू, परविंद्र मेंबर, सुभाष, विनोद, कुलबीर मेंबर, अमित, प्रीतम, राजेंद्र, नफे, चड्ढा व रामकरण आदि के साथ गांव के वरिष्ठ नागरिकों ने पंचायत के इस कदम की सराहना करते हुए कहा कि इससे समाज में एकता और सहयोग की भावना को बढ़ावा मिलेगा। उन्होंने बताया कि धर्मशाला का निर्माण पूरा होने के बाद वाल्मीकि समाज के साथ-साथ गांव के सभी वर्गों को लाभ मिलेगा।

डेंगू का आंकड़ा 254 पर पहुंचा अक्टूबर में मिले चुके 37 मरीज

- घरों में कूलर, फ्रिज, पानी की टंकी व आसपास जमा पानी में लार्वा की जांच की जा रही

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रेवाड़ी

जिले में डेंगू पॉजिटिव मरीजों का आंकड़ा थमने का नाम नहीं ले रहा है। डेंगू के तीन नए मरीज और मिलने से सीजन में पॉजिटिव मरीजों की संख्या 254 पर पहुंच चुकी है। अक्टूबर माह में अब तक में 37 डेंगू पॉजिटिव मरीज मिल चुके है। गत वर्ष जिले में डेंगू के 411 मरीज मिले थे। नगर परिषद की ओर से गत वर्ष की तरह इस वर्ष भी फोगिंग कार्य में सुस्ती बरतने के कारण डेंगू का आंकड़ा प्रदेश में सबसे ज्यादा हो गया है। डिप्टी सीएमओ डा. अमित यादव ने कहा कि हेल्थ इंस्पेक्टर टीम के साथ ब्रीडिंग चेकर डेंगू की रोकथाम के लगातर प्रयास कर रहे है। लोगों को डेंगू व मलेरिया जैसी बीमारियों से बचाव के लिए जागरूक किया जा रहा है तथा घरों में कूलर, फ्रिज, पानी की टंकी व आसपास जमा पानी में लार्वा की जांच की जा रही है। घरों में लार्वा मिलने पर लोगों को नोटिस भी दिए जा रहे है। अब तक लार्वा मिलने पर 3451 लोगों को नोटिस दिए जा चुके है। स्वास्थ्य विभाग की एमपीएचडब्ल्यू व ब्रीडिंग चेकर टीम अब तक सोर्स रिडेक्शन एक्टिविटी के तहत 1893660 घरों में लार्वा की जांच कर चुकी है।

छात्राओं की रचनात्मकता, आत्मनिर्भरता एवं उद्यमिता भावना को प्रोत्साहित किया

गवर्नमेंट गर्ल्स कॉलेज में लगा दिवाली मेला

छात्राओं ने अपने हाथों से तैयार किए गए सजावटी सामान, होममेड स्नैक्स, आर्ट एंड क्राफ्ट आदि आइटम्स के स्टॉल लगाए

बहादुरगढ़। कॉलेज में लगी स्टॉल्स का अवलोकन करती प्रिंसिपल डॉ. अल्का गुलाटी।

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बहादुरगढ़

राजकीय महिला महाविद्यालय बहादुरगढ़ के प्लेसमेंट सेल की ओर से शनिवार को दिवाली मेला का आयोजन किया गया। इसमें छात्राओं ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। मेले के दौरान छात्राओं की रचनात्मकता, आत्मनिर्भरता एवं उद्यमिता भावना को प्रोत्साहित किया गया। शनिवार को गर्ल्स कॉलेज परिसर में आयोजित दिवाली मेले में छात्राओं ने अपने हाथों से तैयार किए गए सजावटी सामान, होममेड स्नैक्स, आर्ट एंड क्राफ्ट आदि आइटम्स के स्टॉल लगाए। इन स्टॉल्स के माध्यम से छात्राओं ने अपनी प्रतिभा और व्यावसायिक कौशल का सुंदर प्रदर्शन किया। कार्यक्रम का शुभारंभ कॉलेज की प्राचार्या डॉ. अल्का गुलाटी द्वारा किया गया।

छात्राओं ने सांस्कृतिक दी प्रस्तुतियां

इस प्रकार की गतिविधियां छात्राओं को आत्मनिर्भर बनने की दिशा में प्रेरित करती हैं और उन्हें वास्तविक कार्यानुभव प्रदान करती हैं। कार्यक्रम के दौरान छात्राओं ने सांस्कृतिक प्रस्तुतियां, नृत्य और संगीत से सभी का मन मोह लिया। कॉलेज परिसर में उत्साह और उमंग का माहौल देखने लायक था। प्लेसमेंट सेल के संयोजक रविंद्र ने सभी का धन्यवाद करते हुए कहा कि भविष्य में भी ऐसे आयोजन निरंतर होते रहेंगे ताकि छात्राओं को रोजगार एवं कौशल विकास के अधिक अवसर मिल सकें।

सीएसआर स्कीम

छात्रवृत्ति प्राप्त करने वाली छात्राएं सम्मानित

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रेवाड़ी

सेक्टर-18 स्थित प्रथम महिला शिक्षिका माता सावित्रीबाई फुले राजकीय कन्या महाविद्यालय में शनिवार को कॉरपोरेट सोशल रिस्पांसिबिलिटी यानि सीएसआर स्कीम के तहत छात्रवृत्ति प्राप्त करने वाली 48 छात्राओं के लिए सम्मान समारोह आयोजित किया गया। यह छात्रवृत्ति एचपीसीएल कंपनी के सीएसआर इनीशिएटिव पढ़ो के तहत प्रदान की गई थी। इस अवसर पर एचपीसीएल रेवाड़ी पाइपलाइन के उप महाप्रबंधक राजेश बरियार मुख्य अतिथि के तौर पर उपस्थित थे तथा एचपीसीएल के प्रबंधक निनाद देवडे व यादविका विशिश्ट अतिथि रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए महाविद्यालय प्राचार्या डा. ज्योति यादव ने एचपीसीएल टीम का इस योगदान के लिए धन्यवाद किया।

पेड़ की टहनी से चोटिल व्यक्ति की पीजीआई में मौत

कोसली। अहमदपुर पड़तल गांव में पेड़ की टहनी गिरने से चोटिल हुए व्यक्ति की उपचार के दौरान मौत हो गई। मृतक वेदप्रकाश के भतीजे संजय कुमार ने कोसली पुलिस को बताया कि उनके चाचा वेदप्रकाश एक अक्टूबर को बकरी चराने के लिए जंगल में गए थे। वहां पेड़ की डाली काटते हुए टहनी उनके ऊपर गिर गई, जिससे उन्हें काफी चोट आई। परिजन उन्हें रेवाड़ी सिविल अस्पताल ले गए। जहां से उन्हें रोहतक पीजीआई रैफर कर दिया गया। वे दस दिन से पीजीआई में उपचाराधीन थे। शनिवार को उनके चाचा की मृत्यु हो गई। परिजनों ने उनकी मौत को लेकर किसी प्रकार का कोई संदेह नहीं जताया। पुलिस ने सामान्य कार्रवाई करते हुए मृतक के शव का पोस्टमार्टम करा कर परिजनों को सौंप दिया है।

खबर संक्षेप

बहादुरगढ़। बेटियों के लिए बनाए पोस्टर-स्लोगन दिखाती स्वयंसेविकाएं।

बालिका दिवस पर बनाए पोस्टर-स्लोगन

बहादुरगढ़। वैश्य आर्य शिक्षण महिला महाविद्यालय में अंतरराष्ट्रीय बालिका दिवस के अवसर पर शनिवार को स्वयंसेविकाओं ने पोस्टर एवं स्लोगन बनाए। इनके माध्यम से आमजन को बालिकाओं के अधिकारों की रक्षा और उनके संरक्षण के लिए जागरूक किया। स्वयंसेविकाओं ने पोस्टर एवं स्लोगन के माध्यम से बताया कि बेटी कुदरत का उपहार हैं और इन्हें सम्मान देना चाहिए। हर माता-पिता को चाहिए कि वह अपनी बेटी को सशक्त बनाए और आगे बढ़ाएं।

बहादुरगढ़। सभा के दौरान नारेबाजी करते यूनियन से जुड़े कर्मचारी।

कल पंचकुला मुख्यालय पर करेंगे प्रदर्शन

बहादुरगढ़। शनिवार को एचएसवीपी हुडा जनस्वास्थ्य कर्मचारी यूनियन की बहादुरगढ़ सभा के पदाधिकारियों व कर्मचारीयों की विशेष आम सभा बुलाई गई। इसकी अध्यक्षता जिला प्रधान रमन कुमार जून ने की और संचालन रमेश कुमार बिडलान ने किया। रमन कुमार जून ने कहा कि राज्य कमेटी के आह्वान पर लंबित मांगों को लेकर 13 अक्टूबर को पंचकुला पहुंचकर एचएसवीपी मुख्यालय पर धरना प्रदर्शन किया जाएगा।

झज्जर। उत्कृष्ट प्रदर्शन पर पुरस्कार लेते हुए छात्राएं।

निबंध प्रतियोगिता में छात्राओं का प्रदर्शन उत्कृष्ट

झज्जर। स्टेट इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस स्टडीज इन टीचिंग एजुकेशन के तीन छात्राओं ने जिला स्तरीय विज्ञान निबंध लेखन प्रतियोगिता में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है। डॉक्टर राजवंती ने बताया कि इस प्रतियोगिता में संस्थान की छात्रा कनिका, खुशी तथा स्नेहा ने उत्कृष्ट स्थान हासिल करते हुए पुरस्कार जीते।

बहादुरगढ़। प्रदर्शनी में लोगों को सांगानेरी प्रिंट दिखाते राजकुमार पांडेय।

पूरी दुनिया में धूम मचा रही सांगानेरी हाथ की छपाई

परंपरावादी कारीगरों की सांस्कृतिक पहचान को आगे बढ़ा रहे राजस्थान के राजकुमार पांडेय

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बहादुरगढ़

राजस्थान की सबसे पुरानी कला सांगानेरी प्रिंट की पहचान देश में ही नहीं बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर है। सांगानेर प्रिंट की छपाई 16वीं शताब्दी के प्रारंभ से शुरू हुई थी। राजा-महाराजाओं के इस पसंदीदा प्रिंट में प्राकृतिक रंगों का उपयोग कर छपाई की जाती है। शहर के सेक्टर-6 में स्थित कम्युनिटी सेंटर में चल रही दस दिवसीय नाबार्ड नेशनल आर्ट एंड कल्चर उत्सव एवं प्रदर्शनी में भी नेशनल मेरिट सर्टिफिकेट प्राप्त राजकुमार पांडेय की हाथ छपाई की चादर पूरी दुनिया की भांति धूम मचा रही है। बता दें कि पुश्तैनी काम को आगे बढ़ा रहे राजकुमार पांडेय को वर्ष 2004 में नेशनल मेरिट सर्टिफिकेट प्राप्त हो चुका है।

उनके अनुसार सांगानेरी प्रिंट की शुरुआत जयपुर के सांगानेर से हुई थी। जयपुर बसने से 200 साल पहले आमेर नरेश पृथ्वीराज ने अपने 19 पुत्रों में से एक सांगा को संग्रामपुरा का सामंत बनाया था। उनके नाम पर इस जगह का नाम सांगानेर पड़ा। करीब 500 साल पुरानी इस छपाई की शुरुआत आमेर के राजपरिवार ने की थी। इसके लिए उन्होंने गुजरात से खत्रियों को बुलवाया। इन कारीगरों ने 200 साल तक यहां सांगानेरी प्रिंट पर काम किया। उसके बाद हिंदू छीपा कम्यूनिटी शाही परिवार के लिए डिजाइन वाले प्रिंटेड कपड़े बनाने लगे। समय के साथ इस प्रिंट को आम लोगों के लिए भी बनाया जाने लगा। सांगानेरी प्रिंट बेल-बूटों की छपाई के लिए प्रसिद्ध है। इसमें छपाई का काम बहुत बारीकी से किया जाता है।

सांगनेरी प्रिंट में समय के साथ आए बदलाव

एनएमसी अवार्डी राजकुमार पांडेय का कहना है कि सांगनेरी प्रिंट में मुख्यतः बेल, बूटी और पत्तों की छपाई की जाती है। ये प्रिंट भी एक साथ एक कतार में छापे जाते हैं। सफेद कॉटन के कपड़े को जमीन पर रखकर लकड़ी के ब्लॉक्स से छपाई की जाती है। सांगानेरी प्रिंट के ब्लॉक्स और छपाई में समय के साथ काफी बदलाव आया है। राजकुमार बचपन से अपने इस पुश्तैनी काम को देखते आ रहे है। उनके अनुसार हस्तशिल्पी या दस्तकार अपने हाथों के कौशल से सजावट की चीजें बनाते हैं। लेकिन आधुनिक मशीनरी युग में यह कला अब अपना अस्तित्व बचाने के लिए संघर्ष कर रही है। आधुनिकीकरण ने सांगानेरी प्रिंट को प्रभावित किया है। अब प्राकृतिक कलर्स की जगह सिंथेसाइज्ड कलर्स का इस्तेमाल किया जाता है। असली सांगनेरी प्रिंट के नाम पर बाजारों में इसकी हूबहू नकल मिलने लगी है। एक आम ग्राहक इनमें अंतर नहीं कर पाता।

एसआईएएसटीई झज्जर की कनिका ने निबंध प्रतियोगिता में पाया प्रथम स्थान

जिला स्तरीय विज्ञान निबंध प्रतियोगिता

11 कॉलेजों के 42 विद्यार्थियों ने प्रतियोगिता में दिखाई प्रतिभा

प्रतिभागियों के दस सर्वोत्तम निबंधों को हरियाणा राज्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद की राज्य स्तरीय निबंध लेखन प्रतियोगिता के लिए अनुमोदित किया

हरिभूमि न्यूज ▶▶ झज्जर

राजकीय स्नातकोत्तर नेहरू महाविद्यालय में जिला स्तरीय विज्ञान निबंध लेखन प्रतियोगिता आयोजित की गई। जिसमें जिले के 11 महाविद्यालयों के 42 विद्यार्थियों ने भाग लिया। प्रतियोगिता का शुभारंभ प्राचार्य डॉक्टर दलबीर सिंह ने किया। जबकि प्रतियोगिता का आयोजन तथा मंच संचालन रसायनशास्त्र प्राध्यापक राकेश पसरीजा ने किया। उन्होंने विद्यार्थियों को प्रतियोगिता के नियमों के संबंध में विस्तार से अवगत कराया। प्रतियोगिता के विषय उच्च शिक्षा में बौद्धिक संपदा अधिकार, ग्रह-जनसमुदाय और नीति, राष्ट्रीय सुरक्षा में आत्मनिर्भर नवाचार, राष्ट्रीय सुरक्षा में डिजिटल तकनीक की भूमिका और क्लाउड स्टोरेज का इतिहास, भूमिका और कमियां रहे। प्रतिभागियों के दस सर्वोत्तम निबंधों को हरियाणा राज्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद की राज्य स्तरीय निबंध लेखन प्रतियोगिता के लिए अनुमोदित किया गया। इनमें एसआईएएसटीई झज्जर की कनिका का निबंध पहले, राजकीय महाविद्यालय बहादुरगढ़ की मनीषा का दूसरे, एसआईएएसटीई झज्जर की खुशी का तीसरे, राजकीय महाविद्यालय बहादुरगढ़ की गौरी कश्यप का चौथे, राजकीय महिला महाविद्यालय बहादुरगढ़ की मुस्कान का पांचवें, महाराजा अग्रसेन महिला महाविद्यालय की एकता का छठे, एसआईएएसटीई की स्नेहा का सातवें, राजकीय महाविद्यालय बादली की मनीषा का आठवें, राजकीय महिला महाविद्यालय बहादुरगढ़ की चेतना का नौवें और राजकीय महाविद्यालय बहादुरगढ़ के मोहित कुमार का निबंध दसवें स्थान पर अनुमोदित किया गया। प्रतियोगिता का निर्णय पंडित नेकीराम शर्मा राजकीय महाविद्यालय रोहतक के रसायन शास्त्र प्राध्यापक डॉक्टर रविंद्र सिंह, राजकीय महिला महाविद्यालय लाखन माजरा की भौतिकी प्राध्यापिका डॉक्टर अंजलि मान तथा राजकीय महाविद्यालय बहादुरगढ़ की जीव विज्ञान प्राध्यापिका डॉक्टर मोनिका ने किया।

झज्जर। होनहार प्रतिभागी को सम्मानित करते हुए प्राचार्य डॉक्टर दलबीर सिंह एवं स्टॉफ सदस्य।

किड्स एथलेटिक्स प्रतियोगिता में खिलाड़ियों ने दिखाई प्रतिभा

झज्जर। शनिवार को पुलिस लाइन मैदान में आयोजित दूसरी जिला किड्स एथलेटिक्स प्रतियोगिता में तीन सौ से अधिक खिलाड़ियों ने विभिन्न स्पर्धाओं में अपना खेल कौशल दिखाया। प्रतियोगिता परिणामों में अंडर 14 आयु वर्ग की 100 मीटर दौड़ में कृष्ण कुमार ने पहला, अमन शर्मा ने दूसरा व रसिक ने तीसरा स्थान प्राप्त किया। लड़कियों में कविता, लक्ष्य व आरजू ने क्रमशः प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान हासिल किया। इसी आयु वर्ग की 600 मीटर दौड़ में गौरव प्रथम व पार्थ द्वितीय रहा। अंडर 8 आयु वर्ग की 60 मीटर दौड़ में मनीष, अनुनय, जतिन व अयांश, इसी आयु वर्ग की लड़कियों में धारा, विरल व रितिका को उत्कृष्ट स्थान मिला। अंडर 10 आयु वर्ग की 60 मीटर दौड़ में जस, मयंक व भूमिक क्रमशः प्रथम, द्वितीय व तृतीय रहे। सभी विजेता खिलाड़ियों को मुख्यातिथि के रूप में उपस्थित एसीपी दिनेश कुमार, डीएवी पुलिस पब्लिक स्कूल के प्राचार्य पंकज वालिया, राजीव खत्री, राजेश फौगाट, धर्मवीर छिक्कारा, चरण सिंह राठी, अध्यापिका मनीषा, जिला एथलेटिक्स संघ के अध्यक्ष जयप्रकाश जाखड़, इंस्पेक्टर अजय जाखड़, कोच रविंद्र, भगवान, नेहा, सतेंद्र द्वारा मेडल व प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया।

झज्जर। विजेता खिलाड़ियों को सम्मानित करते हुए अतिथि।

सड़कों का होगा पुनर्निर्माण आमजन को मिलेगी राहत

चेयरमैन ने कहा: दीपावली के बाद शुरू होगा कार्य, शहर के चहुंमुखी विकास की प्रतिबद्धता

हरिभूमि न्यूज ▶▶ झज्जर

लंबे समय से बदहाल सड़कों की समस्या से जूझ रहे शहरवासियों जल्द ही राहत मिलने वाली है। नप चेयरमैन जिले सिंह सैनी ने बताया कि दीपावली के बाद धौड़ चौक से यादव धर्मशाला, चौधरी छोटूराम द्वार से शिव चौक, सिलानी गेट से कुलदीप चौक, राव तुलाराम चौक से एडवांटा अस्पताल तक सड़कों के पुनर्निर्माण का कार्य शुरू कर दिया जाएगा। इसके लिए टेंडर प्रक्रिया पूरी कर ली गई है। उन्होंने कहा कि शहर का चहुंमुखी विकास उनकी प्राथमिकता है। सड़कें किसी भी शहर की जीवन रेखा होती हैं। बेहतर सड़कों से न केवल यातायात में सुविधा मिलती है, बल्कि व्यापार और विकास के अन्य कार्यों में भी तेजी आती है। उन्होंने बताया कि बरसात के कारण खस्ता हाल हो चुकी सड़कों का पुनर्निर्माण कार्य दीपावली के बाद शुरू करवा दिया जाएगा।

झज्जर। जिले सिंह सैनी, नप चैयरमैन झज्जर।

भाजपा ने किया कार्यकारिणी विस्तार नए मंडल प्रभारियों की सूची जारी

हरिभूमि न्यूज ▶▶ झज्जर

भारतीय जनता पार्टी द्वारा कार्यकारिणी विस्तार करते हुए नए मंडल प्रभारियों की सूची जारी की है। भाजपा जिलाध्यक्ष विकास वाल्मीकि ने कहा कि उनका संगठन केवल चुनाव के समय सक्रिय रहने वाला दल नहीं, बल्कि निरंतर समाज सेवा, जनकल्याण और संगठन सशक्तिकरण के कार्यों में जुटा रहने वाला संगठन है। इसी क्रम में जिले की चारों विधानसभा क्षेत्रों के नए मंडल प्रभारियों की सूची भाजपा प्रदेशाध्यक्ष मोहन लाल बड़ौली द्वारा जारी की गई है। इससे संगठन को और अधिक सशक्त एवं गतिशीलता मिलेगी। उन्होंने कहा कि भाजपा का लक्ष्य प्रत्येक स्तर पर जनसेवा और संगठन विस्तार को प्राथमिकता देना है।

भाजपा मंडल प्रभारी किए नियुक्त

जिला मीडिया प्रभारी गीतांशु चावला ने कहा कि भाजपा का प्रत्येक कार्यकर्ता समाज सेवा के कार्यों में समर्पित भाव से कार्य करता है। उन्होंने बताया कि जारी सूची के अनुसार झज्जर विधानसभा क्षेत्र से भीष्मपाल को झज्जर शहरी, अमित जून को झज्जर ग्रामीण, मनीष शर्मा को मातनहेल व हरीश दलाल को साल्हावास मंडल प्रभारी बनाया गया है। बादली विधानसभा क्षेत्र में संदीप हसनपुर को बादली, जय किशन छिल्लर को दादरी तोए, बंसत सूरहा को सुबाना, विनोद बाढ़सा को कुलाना मंडल प्रभारी नियुक्त किया गया है। बेरी विधानसभा क्षेत्र में नकुल चौपड़ा को डीघल, राजीव दहिया को छारा व नवीन बंटी को बेरी मंडल प्रभारी बनाया गया है। बहादुरगढ़ विधान सभा क्षेत्र में प्रवीण गर्ग को बहादुरगढ़, दिनेश शेखावत को मांडौठी व केशव को कानौंदा मंडल का प्रभारी नियुक्त किया।

दिनदहाड़े युवक की स्कूटर चोरी

रोहतक। त्योहारी सीजन की शुरुआत में ही शहर में चोरी की वारदातें सामने आने लगी है। राम गली से शनिवार सुबह 10:00 बजे दिन दहाड़े दुकान के बाहर खड़ी स्कूटर चोरी हो गया। राम गली में सचिन टेलर के नाम से दुकान चला रहे पाड़ा मोहल्ला निवासी सचिन रोहिल्ला के अनुसार उसने अपनी एक्टिवा सुबह 10:00 बजे अपनी दुकान के आगे खड़ी की थी।

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
बहादुरगढ़ : सूरजमल वाली गली, गणपति ट्रैवलर्स के ऊपर, नजदीक टैक्सी स्टैंड, बहादुरगढ़
झज्जर :- पुराना बर्फ खाना रोड, शिव चौक, झज्जर
फोन : 8295738500, 8814999142, 8295157800, 9253681005

मृत्यु अंत नहीं है
मृत्यु कभी भी अंत नहीं हो सकती
मृत्यु एक पथ है, जीवन एक यात्रा है
आत्मा पथ प्रदर्शक है।

हरिभूमि
राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक
इस शोकाकुल समय में हम आपके सहभागी हैं।
तेरहवीं/श्रद्धान्जलि/शोक संदेश
आप अर्पित कीजिये अपने श्रद्धा-सुमन हरिभूमि के माध्यम से

साईज	संस्करण	विशेष छूट राशि
5×8 सें.मी 10× 8 सें.मी	स्थानीय संस्करण के अन्दर के पृष्ठ पर	रु. 2500/- रु. 3000/-

+5% GST Extra
नोट : विशेष छूट राशि केवल उपरोक्त साईज पर मान्य। अन्य किसी साईज के लिए कार्ड रेट लागू।
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
झज्जर : हरिभूमि कार्यालय, पुराना बर्फ खाना रोड, शिव चौक, फोन : 8295876400
बहादुरगढ़ : सुरजमल वाली गली, रोहतक रोड, गणपति ट्रैवल्स के ऊपर, 8295852900

चित्रकार साक्षी को मिली पेंटिंग किट

हरिभूमि न्यूज ▶▶ झज्जर

राजकीय स्नातकोत्तर नेहरू महाविद्यालय की बीए तृतीय वर्ष की छात्रा साक्षी को महाविद्यालय के पूर्व छात्र रहे सेवानिवृत मेजर जनरल ओम गुलिया ने उसकी प्रतिभा का सम्मान करते हुए पेंटिंग किट भेजा है। मेजर जनरल गुलिया वर्तमान में मुम्बई में एक कंपनी में मुख्य कार्यकारी अधिकारी के तौर पर कार्यरत हैं और उनको छात्रा साक्षी ने खुद बनाई गई उनकी पेंटिंग भेंट की थी। प्राचार्य डॉक्टर दलबीर सिंह ने पूर्व छात्र संगठन के प्रधान कर्नल योगेन्द्र सिंह, डॉक्टर प्रताप फलसवाल तथा श्रीकिशन चाहर की उपस्थिति में छात्रा साक्षी को पेंटिग किट भेंट की। गौरतलब है कि छात्रा साक्षी ने मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनीं और कैबिनेट मंत्री डॉक्टर अरविंद शर्मा को भी उनके स्कैच बनाकर भेंट किए हैं।

झज्जर। होनहार छात्रा को पेंटिंग किट भेंट करते हुए प्राचार्य डॉक्टर दलबीर सिंह एवं अन्य।

प्रदेश में कानून व्यवस्था फेल: अभय चौटाला

हरिभूमि न्यूज ▶▶ झज्जर

इनेलो सुप्रीमो अभय सिंह चौटाला ने शनिवार को अनाज मंडी परिसर में धान और बाजरे खरीद का जायजा लिया। उन्होंने किसानों और आढ़तियों से मुलाकात की। आढ़तियों और किसानों ने उन्हें धान व बाजरा खरीद को लेकर आ रही समस्याओं के बारें में अवगत कराया। बाद में पत्रकारों से रूबरू होते हुए उन्होंने कहा कि प्रदेश में कानून व्यवस्था है ही नहीं। प्रदेश में जंगल राज है और अगर प्रदेश में कानून व्यवस्था होती तो अपहरण, डकैती की घटनाएं नहीं होती और ना ही फिरौतियां मांगी जाती।

झज्जर। अनाज मंडी में किसानों और आढ़तियों से बातचीत करते हुए अभय सिंह चौटाला।

सरकार अधिकारियों को बचाने में लगी: अभय सिंह चौटाला

अभय सिंह चौटाला ने कहा कि आज इससे बड़ा उदाहरण क्या होगा कि एक आईपीएस अफसर ने सुसाइड किया है और उन्होंने अपने सुसाइड नोट में सारे कारण लिखे हैं कि मैं किस वजह से सुसाइड कर रहा हूं। लेकिन सुसाइड नोट में जिन लोगों के नाम लिखे हुए हैं सरकार उनको बचाने के प्रयास में लगी हुई है। ऐसे में काम कौन करेगा और फिर कैसे प्रदेश की कानून व्यवस्था दुरुस्त रहेगी। उन्होंने कहा कि सरकार को उन लोगों को बचाने की बजाय इसकी निष्पक्ष जांच करवानी चाहिए ताकि जिस व्यक्ति ने सुसाइड किया है उसके परिवार को न्याय मिल सके।

संदिग्ध हालात में युवक की मौत

बहादुरगढ़। शहर की छिकारा कॉलोनी में रहने वाले एक युवक की संदिग्ध हालात में मृत्यु हो गई। मृतक के परिजनों ने एक टैंकर सप्लायर पर मारपीट करने का आरोप लगाया है। फिलहाल पुलिस ने संबंधित धाराओं के तहत केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। उनके अनुसार पोस्टमार्टम रिपोर्ट से ही मौत के असल कारणों का पता चल सकेगा। मृतक की पहचान मूल रूप से उत्तर प्रदेश निवासी 25 वर्षीय रोहित के रूप में हुई है। रोहित पिछले लंबे समय से बहादुरगढ़ की छिकारा कॉलोनी में रहता था और शहर में दिहाड़ी मजदूरी का काम करता था। पुलिस को दी शिकायत में रोहित के परिजनों ने बताया कि शुक्रवार करीब 11 बजे उसने एक पीने के पानी की सप्लाई करने वाले टैंकर से जबरदस्ती पानी पी लिया था।

उत्कृष्ट प्रदर्शन और शत-प्रतिशत उपस्थिति वाले छात्रों को किया सम्मानित

जीडी गोयनका में हुआ विद्यार्थियों का सम्मान

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बहादुरगढ़

शहर की एचएल सिटी में स्थित जीडी गोयनका स्कूल में शनिवार को विद्यार्थी सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के दौरान कक्षाओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले तथा शत-प्रतिशत उपस्थिति दर्ज कराने वाले विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ प्रिंसिपल द्वारा दीप प्रज्वलन और सरस्वती वंदना के साथ हुआ। उन्होंने विद्यार्थियों के लिए मेहनत और अनुशासन के महत्व पर प्रकाश डाला। स्कूल निदेशिका शैलजा जून ने कहा कि ऐसे कार्यक्रम विद्यार्थियों में पढ़ाई और अनुशासन के प्रति उत्साह बढ़ाते हैं। उन्होंने सभी विद्यार्थियों को मेहनत, ईमानदारी और लगन से आगे बढ़ने का संदेश दिया। उन्होंने यह भी कहा कि छात्रों का यह अथक प्रयास विद्यालय के लिए अविस्मरणीय रहेगा।

बहादुरगढ़। सम्मान समारोह का शुभारंभ करती प्रिंसिपल व अन्य।

विद्यार्थियों के चेहरों पर दिखि खुशी की लहर

समारोह के दौरान अपनी कक्षाओं में प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को प्रमाण पत्र एवं पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। इसके बाद 100 प्रतिशत उपस्थिति दर्ज कराने वाले विद्यार्थियों को विशेष रूप से मंच पर बुलाकर पुरस्कृत किया गया। सम्मानित विद्यार्थियों के चेहरों पर आत्मविश्वास और खुशी झलक रही थी। इस अवसर पर मौजूद उनके अभिभावकों ने विद्यालय की इस पहल की सराहना की।

दीपावली सदियों से धार्मिक और सांस्कृतिक पर्व के रूप में मनाई जा रही है। लेकिन अब इसका स्वरूप राष्ट्रीय, आर्थिक और भावनात्मक एकता का रूप ले चुका है। दीपावली की चमक अब केवल तेल के दीयों में नहीं रही बल्कि डिजिटल स्क्रीन, वैश्विक समारोहों, आर्थिक गतिविधियों में भी हर जगह भारत की सांस्कृतिक शक्ति के रूप में झिलमिलाती है।

धर्म-संस्कृति-आस्था के साथ अर्थव्यवस्था का महापर्व दीपावली

आवरण कथा

शैलेंद्र सिंह

दीपावली अगर पहले के दौर में केवल दीप और पूजा का पर्व था, तो आज यह डिजिटल भारत की संपन्नता और सशक्ति का प्रतीक बन चुकी है। आज हर राज्य, हर भाषा और हर वर्ग के लोग अलग-अलग तरीके से दीपावली को जोरदार तरीके से सेलिब्रेट कर रहे हैं। यह भारत के किसी भी अखिल भारतीय उत्सव का सबसे बड़ा सिंबल है। एक जमाना था, जब गांवों में मिट्टी के दीयों से रोशनी की कतार झिलमिलाती थी। आज उत्तर हो या दक्षिण, पूर्व हो या पश्चिम, देश के सभी शहरों में एलईडी की इंद्रधनुषी झालरें दीपावली के मौके पर संपन्नता की अठखेलियां करती हैं। साथ ही ऑनलाइन दुनिया में डिजिटल ग्रीटिंग्स की भरमार है। दरअसल, दिवाली अब हमारे आर्थिक, सांस्कृतिक वजूद का इंजन बन चुकी है।

होगी कई लाख करोड़ की खरीदारी

दीपावली अब केवल आस्था का त्योहार नहीं बल्कि राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था का महापर्व है। यकीन न आए तो कुछ आंकड़ों पर गौर कर सकते हैं। साल 2024 की दीपावली तिमाही में खरीदारी तकरीबन 4.5 लाख करोड़ तक पहुंच गई थी। इस साल अनुमान है कि यह आंकड़ा 6 लाख करोड़ तक पहुंचेगा। मतलब बिहार जैसे राज्य के लगभग दो सालों का समूचा सालाना बजट के बराबर दिवाली के मौके पर खरीदारी में खर्च हो जाएगा। अकेले ई-कॉमर्स सेक्टर में ही दीपावली के आस-पास अब तक 90 हजार करोड़ की ऑनलाइन बिक्री हो चुकी है। उम्मीद है कि यह तकरीबन पौने दो से दो लाख करोड़ तक पहुंचेगी। ऑटो मोबाइल्स, रियल एस्टेट, इलेक्ट्रॉनिक और ज्वेलरी जैसे क्षेत्र में इस सीजन बिक्री के नए मानदंड रचे जाने हैं। मतलब यह कि दिवाली अब भारतीय अर्थव्यवस्था की धड़कती नब्ज बन चुकी है।

डिजिटल कंपनियों को भी रहता है इंतजार

यह त्योहार अब केवल धार्मिक नहीं, आर्थिक और सांस्कृतिक एकता का भी बड़ा अवसर बन चुका है। आज दीपावली एक किसान से लेकर स्टार्टअप फाउंडर तक के लिए आर्थिक रोशनी की नई उम्मीद बनकर आती है। इस डिजिटल युग में दीपावली सिर्फ घरों या मंदिरों तक नहीं सीमित बल्कि सोशल मीडिया, डिजिटल क्रिएटिविटी और तकनीकी नवाचार का त्योहार बन गई है। 'हैप्पी दीपावली' कहना या लिखना, हर साल दुनियाभर के ट्रेंडिंग टॉपिक्स में शामिल रहने वाला सबसे हॉट विषय होता है। गूगल और एप्पल जैसी कंपनियां दीपावली का महीनों पहले से इंतजार करती हैं। इस मौके पर विशेष डूडल और थीम्स जारी करती हैं। डिजिटल आर्टिस्ट और कंटेंट क्रिएटर्स दीपावली को भारतीय पहचान का वैश्विक प्रतीक मानते हैं। भारत के स्टार्टअप इस मौके पर विशेष फेस्टिव कैंपेन लांच करते हैं जैसे- मेड इन इंडिया जिसमें एक नया संदेश छिपा होता है। कहने का मतलब यह कि दीपावली अब घर-घर की नहीं बल्कि स्क्रीन-स्क्रीन की रोशनी बन चुकी है और पूरे भारत को एक डिजिटल सांस्कृतिक धारा में जोड़ रही है।

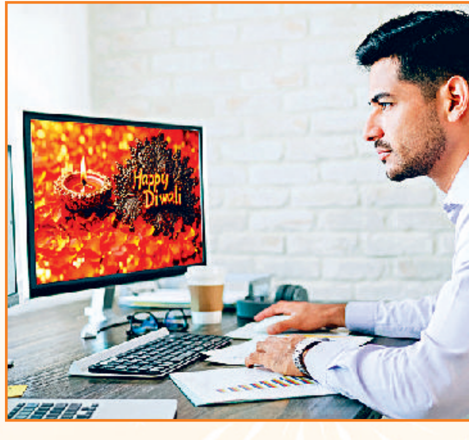

बन चुका है ऑल इंडिया फेस्टिवल

आज दीपावली भाषा और क्षेत्र की सीमाओं से परे जा चुकी है। जहां पहले लोग कहते थे कि हर राज्य अपने-अपने तरीके से दीपावली मनाता है, वहीं अब देखा जा रहा है कि यह संपूर्ण भारत का एक साझी रंगत वाला त्योहार बन चुका है। मॉल्स, कालोनियां, ऑफिसेस, हाउसिंग सोसायटी आदि सब जगह दीपावली के अखिल भारतीय सेलिब्रेशन के दर्शन होते हैं। आज दिवाली भाषा, धर्म, क्षेत्र और वर्ग की सीमाओं को लांघकर अखिल भारतीय उत्सव बन चुकी है, जो सभी भारतीयों को एक साझा पहचान देती है।

विदेशों में भी जगमगाती दीपावली

आज दुनिया में ब्रांड इंडिया की चमक का एक हिस्सा जगमग दीपावली भी है। भारत को वैश्विक ब्रांड के रूप में देखें तो दीपावली उसकी सिग्नेचर इमोशन बन चुकी है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर न्यूयॉर्क, लंदन, दुबई और सिंगापुर में इंडियन दिवाली नाइट आयोजित होती हैं। बुर्ज खलीफा पर भारतीय दिवाली की लाइट शो अब हर साल की परंपरा है। व्हाइट हाउस में, ब्रिटिश पार्लियामेंट और कनाडा में, लेजिसलेचर और दीपावली के दीये जलाना अब ग्लोबल सॉफ्टपावर का प्रतीक है। जरा गौर कीजिए इन आयोजनों के केंद्र में सिर्फ धार्मिकता नहीं होती बल्कि भारतीय आधुनिकता, बहुलता और सांस्कृतिक आत्मविश्वास के दर्शन होते हैं। यह वही आत्मविश्वास है, जो बताता है कि भारत अपनी परंपरा को 21वीं सदी के फ्रेम में फिट करने में सक्षम है।

आधुनिकता-आर्थिक संपन्नता का प्रतीक

देश के हर क्षेत्र में व्यापारिक गतिविधियों की चरम स्थिति, छोटे दुकान से लेकर ई-कॉमर्स के दिग्गज तक दीपावली को अपनी ताकत से जोड़ते हैं। इस तरह यह एक फेस्टिवल टेक्नोलॉजीकरण भी है। डिजिटल पेमेंट, ई-गिफ्ट और सोशल मीडिया ने त्योहार को एक साझा राष्ट्रीय अनुभव बना दिया है। इसलिए दीपावली अब भारत का कल्चरल एक्सपोर्ट बन चुकी है, जो भारतीय प्रवासियों के माध्यम से विश्व स्तर पर मनायी जाती है। कुल मिलाकर दीपावली अब महज एक धार्मिक या सांस्कृतिक त्योहार भर नहीं बल्कि यह भारत की आर्थिक ताकत और आधुनिकता का सबसे सशक्त प्रतीक बन चुका है। *

देश का पावरफुल कल्चरल सुपर ब्रांड

आज के दौर में दीपावली आधुनिक भारत का सबसे पावरफुल सुपर ब्रांड बन चुकी है। हर सफल आधुनिक राष्ट्र के पास एक साझा भावनात्मक प्रतीक होता है। जैसे अमेरिका के पास थैंक्स गिविंग, चीन के पास स्प्रिंग फेस्टिवल, जापान के पास चेरी ब्लॉसम फेस्ट, उसी तरह भारत के पास दीपावली जैसा पर्व है। यह त्योहार भारत की सांस्कृतिक निरंतरता और आधुनिक आकांक्षाओं को भी बहुत करीब से व्यक्त करता है। दीपावली आज महज एक सालाना पर्व नहीं है बल्कि यह भारतीय संस्कृति की गहराई, हमारी तकनीकी उन्नति की चमक, व्यापार की मजबूती, उसकी सक्रियता और सामाजिक एकता की प्रतीक भी बन चुकी है यानी, दिवाली अब केवल धार्मिक नहीं बल्कि राष्ट्रीय सांस्कृतिक गतिविधि है, जो भारत को परंपरा से प्रगति तक जोड़ने वाला पुल बनाती है। दीपावली आज अखिल भारतीय आधुनिक संस्कृति की धुरी है। हर भारतीय समुदाय हिंदू, जैन, बौद्ध और सिख अपने-अपने अर्थों में इसे अपनी विरासत का जीवंत हिस्सा मानते हैं।

एक समय तक दीपावली के मौके पर परिवार, मित्रों, रिश्तेदारों के साथ खेल के तौर पर जुआ खेलने की परंपरा रही। लेकिन हाल के वर्षों में ऑनलाइन गेमिंग के जरिए गैंबलिंग की लत ने बड़ा सामाजिक-आर्थिक संकट खड़ा कर दिया है। इस बारे में अवेयर रहने की जरूरत है।

भारी नुकसान दे सकती है ऑनलाइन गेमिंग की लत

अवेयरनेस

एन.के. अरोड़ा

शगुन और परंपरा के नाम पर जिस तरह से हाल के सालों में लोगों द्वारा दीपावली के मौके पर ऑनलाइन जुए का ट्रेंड बढ़ा है, उसके कारण गैंबलिंग की लत दिनों-दिन बढ़ती जा रही है। यह न केवल व्यक्तिगत बल्कि सामाजिक चिंता का भी विषय है। परंपरा के नाम पर आजमाई जा रही इस खतरनाक आदत के कारण लोगों की जिंदगी ही आर्थिक संकट से घिर गई है।

परंपरा के नाम पर ऑनलाइन गेमिंग: यह मान्यता है कि दीपावली के अवसर पर जुआ खेलना शुभ होता है। इसलिए लोग परंपरा के नाम पर आमतौर पर दीपावली के मौके पर आपस में जुए की गतिविधियों पर हाथ आजमाते हैं। लेकिन कई बार इसके जरिए दीपावली जैसे रोशनी, मेलजोल और खुशियों के त्योहार को परेशानियों का सबब बना लेते हैं। नतीजतन रोशनी के इस त्योहार के ऐन मौके पर उनके घरों में परेशानियों का अंधेरा छा जाता है।

बुरा एडिक्शन है ऑनलाइन गेमिंग: दीपावली की रात ही नहीं ऑनलाइन गैंबलिंग ऐसा एडिक्शन बन गया है, जो सामान्य दिनों में भी लोगों की बर्बादी का कारण बन रहा है। सबसे बड़ी बात तो यह है कि पुलिस भी इस बुराई पर चाहकर भी प्रभावी प्रतिबंध नहीं लगा पाती, क्योंकि यह सारी गतिविधि एक स्मार्टफोन की स्क्रीन या किसी डिजिटल एप्स तक सिमटकर रह गई है, जो एक क्लिक के साथ ही हमारी पकड़ से बहुत दूर जा चुकी होती है।

क्यों-कैसे फंस जाते हैं इस दुष्चक्र में: पहले जुआ खेलने के लिए ऐसी कोई खास सुरक्षित जगह ढूंढ़नी पड़ती थी, जहां तक पुलिस और समाज पर नैतिक दबाव बनाने वाले लोगों की पहुंच न हो या इन लोगों को यहां तक पहुंचने में मुश्किल हो। लेकिन आज की तारीख में ऑनलाइन गेमिंग या मोबाइल के स्क्रीन पर संपन्न होने वाला जुआ इतना आसान हो गया है कि हम जब चाहें और जहां से चाहें, इसे खेल सकते हैं। सबसे बड़ी बात यह है कि करोड़ों, अरबों के आर्थिक आधार वाली बड़ी-बड़ी कंपनियां इसके लिए हमें बोनस और विज्ञापन के जरिए ललचाती हैं। साथ ही लोगों को डिजिटल गतिविधियों के जरिए ललचाकर फंसाने वाली कंपनियां 'दिवाली ऑफर', 'लकी स्पिन', 'कैश बोनस', जैसी रसीली बातों से हमें फांसते हैं और देखते ही देखते हम इन पैसे चूसने वाली स्कीमों के चक्कर में फंस जाते हैं। बस एक जीत के जरिए जिंदगी को मालामाल करने की तमन्ना से हम अपने पास जो भी होता है, सब कुछ बड़ी आसानी से गंवा देते हैं और इस तरह धोखे-धोखे में लाखों, करोड़ों लोग ऑनलाइन गेमिंग में फैले गैंबलिंग के खेल से कंगाल हो जाते हैं।

गंवा देते हैं हजारों करोड़: हर साल लाखों लोगों की बर्बाद कहानियों के बावजूद, लोग इनसे सबक लेने की बजाय अगली बर्बाद कहानियों का हिस्सा बनने के लिए हर समय तैयार रहते हैं। एक अनुमान के मुताबिक पिछले पांच सालों से हर साल दीपावली के मौके पर अनुमानतः आम लोग 15 से 20 हजार करोड़ रुपए तक इस ऑनलाइन जुए में गंवा बैठते हैं, जो उनकी जिंदगीभर की गाढ़ी कमाई होती है। यही कारण है कि आजकल रोशनी के इस पर्व में हर साल लाखों लोगों की जिंदगी में हमेशा-हमेशा के लिए अंधकार भर जाता है।

कानूनी स्थिति: हालांकि पब्लिक गैंबलिंग एक्ट 1867 के तहत जुआ एक सार्वजनिक सामाजिक अपराध है। लेकिन दुर्भाग्य से हमारी हथेली में अटके मोबाइल की स्क्रीन पर धूम-धड़ाके से चलने वाली जुए की महफिलों पर कानून नहीं लागू होता था। हालांकि इस सबके बावजूद तेलंगाना, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश में ऑनलाइन गेमिंग के कई रूपों पर प्रतिबंध लगाया है, बावजूद इसके दिवाली की रात जुए के लिए बेकरार करोड़ों लोगों को यह आंशिक प्रतिबंध बर्बाद होने से नहीं बचा पाते। यही वजह है कि जोर-शोर से लाखों लोग ऑनलाइन गेमिंग पर हर तरह से प्रतिबंध लगाने की बात करते हैं। लेकिन आजादी और लोकतंत्र के नाम पर उतने ही लोग इसे रेगुलेट करने की वकालत करते हैं। यही कारण है कि हर साल लाखों लोगों के ऑनलाइन गेमिंग के जरिए बर्बाद हो जाने के बावजूद इस पर प्रतिबंध नहीं लग रहा। हालांकि 1 अक्टूबर से देश भर में ऑनलाइन गेमिंग विधेयक 2025 लागू हो गया है। इसमें रियल मनी गेमिंग संचालित करने वाली कुछ कंपनियों और एप्स पर बैन लगा दिया गया है। इसका प्रचार करने वालों पर भी कड़े दंड का प्रावधान है।

दूर रहने का लें संकल्प: दीपावली की रोशनी तभी हमारे लिए सार्थक होगी, जब वह हमारे परिवारजनों के चेहरों पर खुशियों का उजास फैलाए, न कि ऑनलाइन गेमिंग के जरिए बर्बादी का अंधेरा छाए। इसलिए इस साल ऑनलाइन गेमिंग से दूरी बनाने के लिए संकल्प लें। *

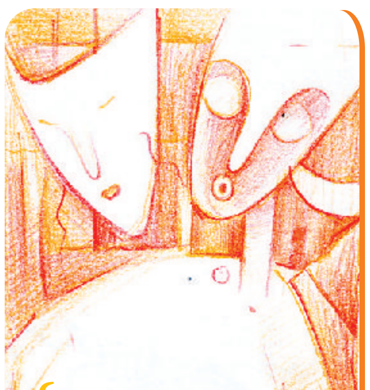

गजल

अब्दुल कलाम

मन के फेर हैं बाबा

इधर देखो जिधर देखो मचा अंधेर है बाबा
सलामत दिन निकल जाए तो समझो खैर है बाबा

कोई सूरत तो फिर निकले कि सच का बोल-बाला हो
मगर निकले भी कैसे झूठ इतना दिलेर है बाबा

आग की जद में शहर जो आ गया तो फिर
बचेगा कुछ नहीं हिजरत में फिर क्यों देर है बाबा

मिटाने हम चले हैं देश की फिरका परस्ती को
जहां पर खून के रिश्तों में देखे बैर है बाबा

यहां सर पे कफन हमने ही बांधा वक्त जब आया
वो कहते हैं कि हम उनके लिए अब गैर हैं बाबा

फाइलों में दब के रह जाती है अब फरियाद भी
कोर्ट-कचहरी न्याय सब मन के फेर हैं बाबा

लघुकथाएं

अनमोल लम्हे

रिटायरमेंट के बाद निर्माण नगर में ही रहना विनीत। सभी दोस्त साथ में मस्ती करेंगे।' शैलेंद्र ने विनीत से कहा, जब वह किसी काम से निर्माण नगर आया हुआ था।

'हां! देखता हूं।' विनीत ने कहा। पर मन ही मन वह सोच रहा था कि क्या है इस शहर में? दिल्ली में जिस सोसाइटी में वह रहता है, वहां कितना अच्छा पार्क है, जिम है, स्विमिंग पूल है। हर अवसर पर कुछ न कुछ बढ़िया कार्यक्रम आयोजित होते रहते हैं। अच्छा जीवन कटेगा वहां। यही सब सोचकर रिटायरमेंट के बाद विनीत निर्माण नगर के बजाय दिल्ली में ही बस गया। सुबह मॉर्निंग वॉक, फिर जिम और उसके बाद स्विमिंग। बीच-बीच में सोसायटी की मीटिंग और अकसर तरह-तरह के कार्यक्रमों में शामिल होना। विनीत का यही रूटीन हो गया था। वह सोचने लगा कि जीवन का पूरा मजा वह ले रहा है।

कुछ समय बाद उसे किसी काम से फिर निर्माण नगर जाने का मौका मिला। तब तक उसके अधिकांश दोस्त रिटायर हो चुके थे। उसने देखा कि सुबह-सुबह कई दोस्त मॉर्निंग वॉक पर इकट्ठे होते हैं। फिर शुरू होती हैं बचपन की बातें और हंसी-ठहाके। कोई अपने टीचर के नकल उतारने वाली हरकत के बारे में बताता तो कोई एक-दूसरे के साथ की जाने वाली शैतानियों के किस्से सुनाता। और भी कई तरह-तरह की बातें वे सब आपस में करते हैं। इसी तरह शाम को भी सारे दोस्त इकट्ठे हो जाते और फिर शुरू हो जाता ठहाकों का दौर। दिल खोल कर हंसते थे सभी दोस्त। ऐसा लगता मानो फिर से वे बचपन की मस्ती का आनंद लेने लगे हों।

अपने दोस्तों के मस्ती भरे अंदाज को देखकर विनीत सोचने लगा वैसे तो दिल्ली में जीवनशैली और सुख-सुविधाएं यहां से बेहतर हैं, पर बचपन के दोस्तों के साथ यह मौज-मस्ती वहां नहीं मिल पाती है। विनीत ने मन ही मन खुद से कहा, 'सच में ये आनंद भरे पल अनमोल हैं।' *

-विनय कुमार पाठक

फॉलोवर्स

आदित्य ने सुबह नींद से जगते ही अपना इंस्टा अकाउंट चेक किया। 'बधाई हो! आपके फॉलोवर्स की संख्या एक लाख हो गई है।' मोबाइल पर नोटिफिकेशन था। आदित्य जोश में आ गया। मुट्ठियां बंद कर हाथों को झटकते हुए कहा, 'यस!' वह काफी दिनों से अपने इंस्टा अकाउंट पर फॉलोवर्स की संख्या बढ़ाने की कोशिश में लगा हुआ था। आदित्य मुंबई में रहता है। उसका टू बीएचके फ्लैट है। कुछ वर्ष पहले उसके मम्मी-पापा की एक दुर्घटना में मौत हो गई थी। वह उनकी अकेली संतान है। बस उसके दादाजी हैं, जो मुंबई से दूर एक गांव में रहते हैं। जब तक मम्मी -पापा रहे तब तक वह उनसे मिलने जाता था। उसके बाद वह कभी गांव नहीं गया। अभी वह अपना मोबाइल देख ही रहा था कि दरवाजे की घंटी बजी। उसने जाकर दरवाजा खोला। सामने एक बुजुर्ग आदमी थे।

'जी कहिए..।'

'तुम निशिकांत के पोते आदित्य हो?'

'जी, आप कौन?'

'मैं दयाल! निशिकांत ने मुझे भेजा है। उसकी तबीयत बहुत खराब है। शायद अब ज्यादा जीवित न रहे। मरने से पहले तुमको देखना चाहता है। मेरे साथ अभी गांव चलो।'

'अभी! एकदम से?'

'हां, नहीं तो शायद तुम अपने दादाजी को आखिरी बार भी ना देख सको।'

'देखिए, अभी मेरे पास बहुत सारे जरूरी काम पेंडिंग हैं। ऐसा करिए, आप जाकर उनसे कह दीजिएगा, मैं रविवार को आऊंगा। हां मेरा मोबाइल नंबर भी लेते जाइए। मुझे फोन पर दादाजी से बात करा दीजिएगा।'

दयाल निराश होकर वापस लौट गए। आदित्य चंद मिनटों तक दादाजी के बारे में सोचता रहा। जैसे ही उसे फॉलोअर्स का ख्याल आया वह उन्हें भूल गया। उसके हाथ तेजी से मोबाइल पर चलने लगे। अगले दिन सुबह-सुबह उसके पास फोन आया, 'तुम्हारे दादाजी नहीं रहे।' दयाल की ही आवाज थी।

'ओह! मैं आता हूं।' आदित्य ने कहा। उसने फौरन अपने बैग में दो जोड़ी कपड़े लिए और गांव के लिए रवाना हो गया। करीब पांच-छह घंटे का रास्ता था। मगर जिस ट्रेन में वह बैठा था, वह जगह-जगह रुक रही थी। छह घंटों में वह आधे रास्ते भी न पहुंच सका। अगले स्टेशन पर पहुंचकर वह ट्रेन से उतर गया और गांव जाने वाली बस पकड़ ली। मगर दुर्भाग्य कि बीच में सड़क धंसने से बस आगे न जा सकी। गांव अब भी तीस किलोमीटर दूर था। वह बाइक सवारों से लिफ्ट लेता हुआ किसी तरह गांव पहुंचा। तब तक काफी देर हो चुकी थी। सूरज ढल चुका था। अंधेरा हो रहा था। हर ओर सूनापन फैल रहा था। दादाजी के घर के दरवाजे पर कुछ महिलाएं खड़ी थीं। उसने उनसे दादाजी के बारे में पूछा।

'हमें लगा अब तुम नहीं आओगे। इसलिए गांव वाले उनको श्मशान घाट ले गए।' वह श्मशान घाट की ओर दौड़ा। उसके दादाजी का शव चार लोग अपने कंधे पर उठाए चले जा रहे थे। पीछे-पीछे ढेर सारे गांव वाले थे। वह वहीं ठिठक गया। उसे तो लगा था, उसके बिना दादाजी को भला कौन कंधा देगा। मगर यहां तो पूरा गांव है दादाजी के पीछे। गांव वालों ने चिता सजाई और दादाजी का शव अग्नि को समर्पित कर दिया। आदित्य भीड़ के पीछे ही ठिठका रहा, आगे नहीं आया। तभी उसके मोबाइल पर नोटिफिकेशन आया 'बधाई हो! आपके फॉलोवर्स की संख्या एक लाख दस हजार हो गई है।' *

-सरस्वती रमेश

पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण

जिंदगी@मगनपुर इस्टेट

वरिष्ठ कथाकार गोविंद उपाध्याय का तीसरा उपन्यास 'जिंदगी@मगनपुर इस्टेट' हाल में ही प्रकाशित होकर आया है। इस नॉस्टेल्जिक उपन्यास का मुख्य पात्र एक बुजुर्ग शख्स विमान भौमिक है, जो मगनपुर इस्टेट में बिताए अपनी किशोरावस्था के दिनों को याद करता है। लेकिन उसमें कहीं भी भावुकता का अतिरेक या पुराने दिनों के प्रति मोह की सांद्रता नजर नहीं आती है। वो खिलंदड़े अंदाज में बीती हुई घटनाओं को याद करता है। पिछली सदी के सातवें-आठवें दशक के बीच की पृष्ठभूमि पर रचा गया यह उपन्यास, उस दौर के मध्यवर्गीय परिवार के किशोरों की जीवनशैली, उनके सपने, उनकी बचकानी हरकतें और छोटी-छोटी खुशियों को भी बटोर लेने की उनकी ललक को बहुत रोचक तरीके से सामने लाता है। हालांकि इस उपन्यास का कथानक और उसमें उपस्थित सभी पात्र काल्पनिक हैं लेकिन जो भी लोग लेखक को व्यक्तिगत रूप से जानते हैं, वो सहज ही इस उपन्यास के कथा-तंतुओं से वास्तविक छवि को बुन सकते हैं। लेखक के किस्सागोई के अंदाज में पाठक को बांधे रखने का जादुई सामर्थ्य है। *

पुस्तकः जिंदगी@मगनपुर इस्टेट (उपन्यास)
लेखकः गोविंद उपाध्याय, **मूल्यः** 299 रुपए,
प्रकाशकः सर्वभाषा ट्रस्ट, दिल्ली

अमेजिंग स्पॉट्स / रजनी अरोड़ा

इन दिनों फेस्टिवल सीजन चल रहा है। आपके घर के आस-पास और बड़ी मार्केट्स में खूब रौनक और भीड़-भाड़ दिख रही होगी। बाजार ऐसा स्थान होता है, जहां से हम सभी अपनी जरूरत का हर सामान खरीद सकते हैं। लेकिन दुनिया में कुछ ऐसे भी बाजार हैं, जो अपनी खूबसूरती, भव्यता, अद्भुत सामानों की बिक्री और अनोखेपन के कारण बहुत मशहूर हैं। ऐसे ही कुछ अनोखे बाजारों और उनकी विशेषताओं पर एक नजर।

ये हैं दुनिया के कुछ अनोखे-प्रसिद्ध बाजार

डम्नोएन सदुआक फ्लोटिंग मार्केट

यह अनोखा बाजार थाईलैंड में बैंकॉक से लगभग 100 किमी. दक्षिण-पश्चिम में राजबुरी इलाके में लगता है। डम्नोएन मार्केट थाईलैंड के सबसे मशहूर और बड़े तैरते हुए बाजारों में से एक है। इस

बाजार का निर्माण 19वीं सदी के अंत में तत्कालीन राजा रामचतुर्थ के आदेश पर हुआ था। जिसका उद्देश्य माइकलोंग और थाची नामक नदियों को आपस में जोड़ना और उनके माध्यम से व्यापार को सुगम बनाना था। आज यह बाजार सदियों पुरानी थाई परंपरा को दर्शाता है। यहां महिला विक्रेता ज्यादा हैं, जो पारंपरिक कपड़े पहनकर लकड़ी की छोटी नावों पर सामान बेचती हैं। इनमें फल, सब्जियां, ताजा पका हुआ स्ट्रीट फूड, स्थानीय उत्पादों के साथ-साथ हस्तशिल्प का सामान होता है। यह बाजार सुबह सात से नौ बजे तक सबसे अधिक व्यस्त रहता है। इच्छुक खरीदार ही नहीं, इस अनोखी फ्लोटिंग मार्केट में घूमने और इसे देखने के लिए बड़ी संख्या में पर्यटक भी नाव से आते हैं।

ईमा कीथेल मार्केट

यह अनोखा बाजार भारत के पूर्वोत्तर राज्य मणिपुर की राजधानी इंफाल में लगता है। यह बाजार लगभग 500 वर्ष पुराना है और एशिया के सबसे बड़े बाजारों में गिना जाता है। ईमा केथेल बाजार की नींव 16वीं शताब्दी में लल्लुप काबा के विरोधस्वरूप हुई मानी जाती है। उस समय पुरुषों को जबरन बंधुवा मजदूर बनाने और दूरदराज के क्षेत्रों में काम करने के लिए भेजने की प्रथा थी। जिसके चलते महिलाओं को घर की आर्थिक जिम्मेदारी संभालने की जिम्मेदारी उठानी पड़ी। उन्हें खेती, विभिन्न खाद्य पदार्थ, घरेलू सामान, परंपरागत सिलाई-बुनाई, हस्तकला निर्मित वस्तुओं का निर्माण, मछली पकड़ने जैसे कार्य करके अपने उत्पाद बेचने पड़े। तभी यह बाजार अस्तित्व में आया।

आज ईमा कीथेल मार्केट दुनिया में एकमात्र ऐसा बाजार है, जो पूरी तरह से महिला विक्रेताओं तकरीबन (6000) द्वारा संचालित किया जाता है। ईमा कीथेल नाम का मणिपुरी भाषा में अर्थ मां का बाजार है, जिसमें प्रायः सभी दुकानदारों को ईमा या मां कह कर संबोधित किया जाता है। यह मुख्यतया तीन खंडों में बंटा हुआ है। जहां घरेलू सामान, फल-सब्जियां, मसाले, विभिन्न प्रकार के जलीय जीव, मणिपुरी पारंपरिक वस्त्र और बुनाई के उत्पाद मिलते हैं। यह केवल एक व्यापारिक केंद्र नहीं, बल्कि मणिपुर की महिलाओं की आत्मनिर्भरता, सशक्तिकरण, गौरव और सामाजिक-आर्थिक महत्व का एक जीवंत प्रतीक है।

मेकलॉन्ग रेलवे मार्केट

थाईलैंड के सामुन सोंग खराम प्रांत में लगने वाली मेकलॉन्ग रेलवे मार्केट को स्थानीय भाषा में तलात रोखूप या फोल्डिंग अंब्रेला मार्केट भी कहा जाता है। यह दुनिया के सबसे अनूठे और रिस्की बाजारों में से एक है। यह बाजार अपनी बिक्री वाले सामान के लिए नहीं, बल्कि एक्टिव रेलवे ट्रैक के किनारे बने होने और भारी आवाजाही के कारण मशहूर है। यानी, बाजार के दुकानदार ही नहीं, खरीदार भी रेलवे ट्रैक पर सामान खरीदते-बेचते हैं। यहां ताजे फल, सब्जियां, समुद्री भोजन और अन्य घरेलू सामान मिलता है। इस बाजार का सबसे बड़ा आकर्षण और अनोखापन है ट्रेन का बाजार के बीचों-बीच दिन में आठ बार गुजरना। जैसे ही ट्रेन के आने का हॉर्न बजता है, सभी दुकानदार रेलवे ट्रैक तक पहुंचने वाले अपनी-अपनी दुकान के तिरपाल, छतरियां और सामान तुरंत हटा लेते हैं। रेलवे ट्रैक पर बेखौफ चलने वाले खरीदार भी रास्ता देकर ट्रेन के गुजरने का इंतजार करते हैं। ट्रेन के चले जाने पर बिना देर किए दुकानें फिर सजा लेते हैं और कुछ पलों के लिए थमे बाजार की रौनक दुबारा शुरू हो जाती है। यह अनूठी दिनचर्या जहां स्थानीय वाणिज्य और रेल परिवहन के बीच तालमेल का एक शानदार उदाहरण है, वहीं यहां आने वाले पर्यटकों के लिए एक अविस्मरणीय अनुभव होता है।

ग्रैंड बाजार

तुर्की देश के इस्तांबुल शहर में स्थित ग्रैंड बाजार को तुर्की भाषा में कापाली चार्शी कहा जाता है। इसका निर्माण 1455 में ऑटोमन साम्राज्य के सुल्तान मेहमेद द्वितीय के आदेश पर शुरू हुआ था। अपनी जटिल वास्तुकला, गुंबददार छत और ऐतिहासिक भव्यता के कारण यह बाजार सिर्फ

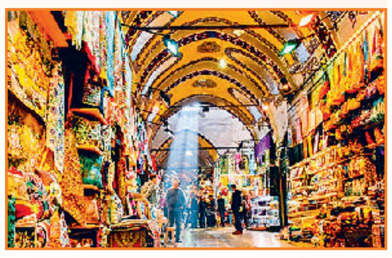

एक शॉपिंग डेस्टिनेशन नहीं है। बल्कि तुर्की की संस्कृति, इतिहास और एशिया-यूरोप के मध्य में एक महत्वपूर्ण व्यापारिक केंद्र के रूप में इस्तांबुल की भूमिका को दर्शाता, जीता-जागता संग्रहालय भी कहा जा सकता है। आज ग्रैंड बाजार दुनिया के सबसे बड़े और सबसे खूबसूरत बाजारों में से एक है। इसमें 61 से अधिक कवर किए गलियारे और 4000 से अधिक दुकानें हैं। सदियों से व्यापार और वाणिज्य का केंद्र रहे ग्रैंड बाजार में लाखों पर्यटक और खरीदार रोजाना पहुंचते हैं। हस्तनिर्मित टर्किश कालीन, रंगीन सेरेमिक की वस्तुएं, सोने-चांदी के आभूषण, चमड़े के सामान के साथ विभिन्न प्रकार के मसाले, आकर्षण का केंद्र हैं। खरीदारी के लिए मोल-भाव करने का प्रचलन भी यहां है, जो आगुंतकों के खरीदारी के अनुभव को अधिक रोमांचक बना देता है। *

डल झील बाजार

भारत के केंद्र शासित प्रदेश कश्मीर की डल झील पर लगता है यह तैरता हुआ डल झील सब्जी बाजार। डल झील के बीच पानी में थोड़े समय के लिए लगने वाला बाजार कश्मीर घाटी की संस्कृति और सुंदरता का अद्भुत प्रतीक माना जाता है। यह भारत का इकलौता और दुनिया के चुनिंदा अनोखे बाजारों में एक है, जो पानी के ऊपर लगते हैं। इस बाजार का नजारा डल झील की शांत नीली पृष्ठभूमि और पहाड़ों की छाया के बीच कश्मीरी जीवनशैली और प्राकृतिक संसाधनों के साथ निवासियों के गहरे जुड़ाव को भी दर्शाता है। डल झील बाजार में रोजाना सुबह पांच से सात बजे तक चहल-पहल बनी रहती है। यानी इस बाजार से यदि किसी को सब्जियां खरीदनी हैं, तो उसे सुबह जल्द ही आना पड़ेगा। स्थानीय विक्रेता लोग शिकारा नाव पर सवार होकर इस बाजार में खुद उगाई सब्जियां लेकर बिक्री के लिए आते हैं। वहीं खरीदार भी अपने शिकारा पर सवार होकर आते हैं और चलते हुए एक नाव से दूसरी नाव पर खरीद-फरोख्त करते हैं।

यूनीक पेंटिंग / मनीष कुमार चौधरी

सदियों पहले इटेलियन पेंटर लियोनार्डो दा विंची द्वारा बनाई गई अद्वितीय पेंटिंग मोनालिसा का आकर्षण अब भी बरकरार है। इस यूनीक पेंटिंग से जुड़े कुछ रोचक तथ्यों पर एक नजर।

मोनालिसा की रहस्यमयी मुस्कान

लियोनार्डो दा विंची की प्रसिद्ध पेंटिंग मोनालिसा ने कल्पना को जितना मोहित किया है, उतना शायद ही किसी कलाकृति ने किया हो। उनके इस चित्र का रहस्य और आकर्षण 30 इंच X 20 इंच के साधारण फ्रेम से कहीं आगे तक फैला हुआ है। वह किताबों, फिल्मों, गीतों और यहां तक कि एक कला चोरी का विषय भी है। समय के साथ पेंटिंग का वार्निश भले ही धुंधला और पीला पड़ गया हो, लेकिन उनकी भावपूर्ण मुस्कान और रहस्यमयी निगाहें अभी भी चमकती हैं।

कौन थी असली मोनालिसा: हालांकि मोनालिसा की पहचान को लेकर कुछ मतभेद हैं। लेकिन ज्यादातर विद्वानों और कला इतिहासकारों का मानना है कि यह चित्र फ्रांसीसी संभ्रांत महिला लिसा डेल जियोकोंडो का है, जो एक धनी रेशम व्यापारी फ्रांसेस्को डेल जियोकोंडो की पत्नी थी। लिसा का जन्म 1479 में हुआ था और उन्होंने 15 साल की उम्र में फ्रांसेस्को से शादी की थी। वह बहुत सुंदर और आकर्षक थीं। लियोनार्डो ने 1503 में मोनालिसा को चित्रित करना शुरू किया और 1517 तक इस पर काम किया। हालांकि यह पेंटिंग डेल जियोकोंडो के घर में कभी नहीं सजी। लेकिन दुनिया भर में बहुत प्रसिद्ध हुई।

स्फुमाटो तकनीक का इस्तेमाल: इस चित्र को बनाने में लियोनार्डो ने अपनी विशिष्ट स्फुमाटो तकनीक का इस्तेमाल किया, जिसमें किसी व्यक्ति के फेस पेंटिंग में होंठों और आंखों के किनारों को सूक्ष्म रूप से धुंधला करके धुएं जैसा रहस्यमयी प्रभाव पैदा किया जाता है। इस प्रभाव से चित्र की आंखें विभिन्न भागों पर घूमती दिखती हैं, मुस्कुराहट बदलती हुई प्रतीत होती है। इस चित्र में ऐसे भाव प्रकट होते हैं, जिसको देखकर यह पक्के तौर पर नहीं कह सकते कि वह खुश है या उदास। वह मुस्कुरा रही है या नहीं। रहस्य का यही स्पर्श पेंटिंग के आकर्षण में इजाफा करता है और दर्शकों को मंत्र-मुग्ध कर देता है।

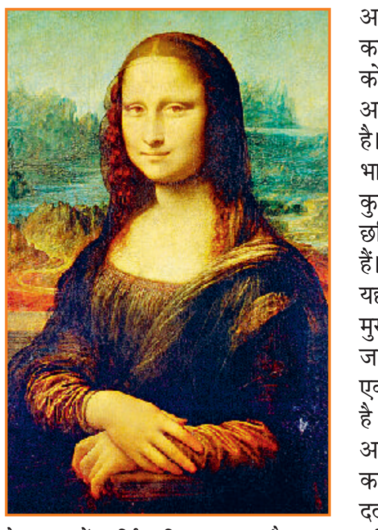

रहस्यात्मक मुस्कान: मोनालिसा की मुस्कान एक सीधी-सादी, हर्षित मुस्कान नहीं है। इसे अकसर उदासी, गंभीरता या किसी रहस्य का संकेत देने वाली मुस्कान के रूप में वर्णित किया जाता है। यह मुस्कान लियोनार्डो की मानवीय अभिव्यक्ति और भावनाओं की बारीकियों को पकड़ने की असाधारण क्षमता को भी दर्शाती है। इस मुस्कान का पेंटिंग आर्ट पर अमिट प्रभाव रहा है, जिसने अनगिनत कलाकारों, लेखकों और फिल्म निर्माताओं को इसकी गहराई का पता लगाने और अपनी व्याख्याएं रचने के लिए प्रेरित किया है। इस पेंटिंग को अब तक की सबसे महान भावनात्मक पेंटिंग तक बताया गया है। कुछ इसे परंपरा से परे, परिभाषा से परे, छवि से परे सत्य की तलाश करते हुए पाते हैं। 'तुम्हारी मुस्कान मोनालिसा जैसी है।' यह कहने का मतलब है-रहस्य। यानी कोई मुस्कान रहस्य और जिज्ञासा से कैसे जुड़ जाती है, मोनालिसा की मुस्कान इसका एक सशक्त उदाहरण है। ऐसा माना जाता है कि मोनालिसा द्वारा अपनी मुस्कान में अपनी खुशी को पूरी तरह से व्यक्त न करने का कारण उनके पिछले नुकसान का दर्द था। यह सिद्धांत कई शोक संतप्त महिलाओं के साथ प्रतिध्वनित होता है।

लियोनार्डो की कलात्मकता का कमाल: लियोनार्डो ने चीजों को गहराई से देखने की अपनी क्षमता और अध्ययनों को अपनी कला में भी शामिल किया। मानव शरीर रचना विज्ञान के बारे में लियोनार्डो की अंतर्दृष्टि और गहरी समझ, उनकी उत्कृष्ट कृतियों को अमूल्य बनाती है। एक अध्ययन के अनुसार, मोनालिसा के मुंह की मूल तस्वीर 97 प्रतिशत बार 'खुशी' के रूप में देखी गई। यह शोध इस बात के पुख्ता सबूत देता है कि मुस्कान वास्तव में खुशी का चित्रण है। मुस्कान के विभिन्न तत्वों का विश्लेषण और पुनर्निर्माण करके वैज्ञानिकों को इस बात की गहरी समझ मिली कि लियोनार्डो दा विंची अपनी कलात्मकता के माध्यम से दर्शकों की भावनाओं को कैसे प्रभावित करते थे।

चोरी भी हो चुकी पेंटिंग: लियोनार्डो अपनी इस पेंटिंग को 14 साल तक अपने साथ रखे रहे। उनके प्रशंसक कलाकारों और छात्रों ने उनके जीवनकाल में ही इस कलाकृति की प्रतियां बनाना शुरू कर दिया था। यह चित्र अंततः लियोनार्डो के अंतिम संरक्षक फ्रांस के राजा फ्रांसिस प्रथम के संग्रह में शामिल हो गया। लेकिन 21 अगस्त 1911 को यह पेंटिंग चोरी हो गई। अगले दो सालों तक उसकी चोरी की कहानी एक सांस्कृतिक सनसनी बनी रही। वर्ष 1913 में विंसेंजो पेरुगिया नामक व्यक्ति पकड़ा गया, जिसने इसे चुराया था। इस तरह मोनालिसा वापस अपने फ्रेम में पहुंच गई। *

अपने देश में विभिन्न आकार और आकृतियों के बेशुमार मंदिर स्थित हैं। इन्हीं में से एक कछुए की आकृति वाला अनूठा मंदिर महाराष्ट्र के कोल्हापुर में स्थित है। इस मंदिर की विशेषताओं और इससे जुड़ी निर्माण कथा के बारे में जानिए।

कछुए की आकृति वाला अजब-अनूठा मंदिर

रोचक / अशोक वाधवाणी

अपने भारत देश में बहुत सारे ऐसे अद्भुत, अनूठे मंदिर हैं, जिन्हें देखने वाला मंत्रमुग्ध होकर निहारता रह जाता है। इनकी स्थापत्य कला का नायाब नमूना हर किसी को अचरज से भर देता है। कुछ की संरचना इतनी भव्य और अनूठी है कि उसे देखने दुनिया भर से लोग आते हैं। कुछेक मंदिर तो ऐसे हैं, जो आकार में छोटे हैं, लेकिन उनमें लोगों को आकर्षित करने की भरपूर क्षमता है। ऐसा ही एक अनोखा मंदिर पश्चिम महाराष्ट्र के कोल्हापुर जिले के पैजार वाडी नामक छोटे से स्थान में स्थित है, जो कि पन्हाला हिल स्टेशन के निकट है। कोल्हापुर-रत्नागिरी रोड पर, कोल्हापुर से महज 25 किमी. की दूरी पर बने इस मंदिर की विशेषता है, इसका कछुए की अनोखी आकृति का होना। कछुआ आकृति वाला दूसरा कोई मंदिर पूरे महाराष्ट्र में और कहीं नहीं है।

अपने अनोखे स्ट्रक्चर के कारण प्रसिद्ध है यह मंदिर

निर्माण से जुड़ी मान्यता: इस मंदिर के निर्माण से जुड़ी मान्यता के अनुसार एक समय में यहां पर श्रीदत्त चिले महाराज के नाम से एक प्रसिद्ध संत हुआ करते थे। वे अपने अनुयायियों के साथ अलग-अलग जगहों का भ्रमण किया करते थे। कोल्हापुर शहर के आस-पास की जगहों जैसे- टेंबलाई, नृहिंहवाड़ी, कोकण क्षेत्र में जोंध मारुति आदि के अलावा पंढ़रपुर जैसी धार्मिक जगहों पर वे अकसर जाते रहते थे। वे जहां भी जाते थे, उस इलाके में रहने वाले कछुओं को अवश्य याद करते थे। किसी स्थान पर पहुंचकर वे जब अपने अनुयायियों से कहते कि कछुआ यहीं-कहीं होना चाहिए, तो उनके शिष्यों की भाग-दौड़ शुरू हो जाती। उन शिष्यों के अचरज का ठिकाना नहीं रहता, जब गुरुदेव के कहे स्थान पर कछुए का दर्शन हो जाता था। श्रीदत्त महाराज का कछुए के प्रति इतना लगाव-जुड़ाव क्यों था? इसकी सही-सही जानकारी नहीं मिली। लेकिन उनके अनुयायी और शिष्य मानते थे कि महाराज जहां कह देंगे, वहां कछुआ जरूर दिख जाता था। वर्ष 1986 में उनके देह त्यागने के बाद उनकी समाधि बनाई गई। मंदिर ट्रस्ट के सारे सदस्यों ने योजना बनाई कि चिले महाराज का कछुए के प्रति आकर्षण को ध्यान में रखकर कछुए की आकृति वाला मंदिर बनवाया जाएगा।

मंदिर की संरचना-विशेषता: कुल 5000 स्क्वायर फीट एरिया में बने इस मंदिर की ऊंचाई 51 फुट, लंबाई 60 फुट और चौड़ाई 80 फुट है। इसकी विशेषता यह है कि मंदिर के निर्माण में किसी भी खंबे का सहारा नहीं लिया गया है। इसकी खूबियों, खासियतों को ध्यान में रखकर ही एक अमेरिकन संस्था ने इसे वर्ष 2005 'आउटस्टैंडिंग स्ट्रक्चर ऑफ द ईयर' के पुरस्कार से सम्मानित किया है।

ऐसे किया गया निर्माण: इस मंदिर की योजना को मूर्त रूप देने के लिए पुंडलिक राव इंगले ने विशेष प्रयास किए थे। इसे बनाने के लिए समाचार पत्रों में विज्ञापन देकर आर्किटेक्ट्स द्वारा डिजाइनें मंगाई गईं। आखिरकार 15 में से एक आर्किटेक्ट प्रमोद बेरी की डिजाइन का चयन किया गया। इस तरह मंदिर का निर्माण पूरा किया गया। इस मंदिर के अंदर ही चिले महाराज की प्रतिमा स्थापित की गई है, जो श्रद्धालुगणों की आस्था का केंद्र है।

लगता है श्रद्धालुओं का जमघट: ट्रस्ट के वर्तमान अध्यक्ष बाबा साहब चव्हाण के अनुसार देश के कोने-कोने से श्रद्धालुओं का तांता, दर्शन करने के लिए इस मंदिर में लगा रहता है। कई विशेष धार्मिक अवसरों जैसे- श्रीदत्त जयंती, चिले महाराज जी की जन्मतिथि, पुण्यतिथि, हर माह की अमावस्या, गुरु पूर्णिमा, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी आदि धार्मिक-आध्यात्मिक-सामाजिक अवसरों पर कई कार्यक्रमों का यहां आयोजन किया जाता है। *

जो फिल्में कॉमर्शियली सक्सेसफुल हैं, जरूरी नहीं कि वे कालजयी फिल्में भी हों। ऐसे ही यह भी जरूरी नहीं कि सदाबहार कालजयी फिल्मों का बॉक्स-ऑफिस रिकॉर्ड भी अच्छा रहा हो। बॉलीवुड की कुछ क्लासिक और कॉमर्शियली सक्सेसफुल फिल्मों के फंडे पर एक नजर।

बॉलीवुड की क्लासिक फिल्में वर्सेस कॉमर्शियली हिट फिल्में

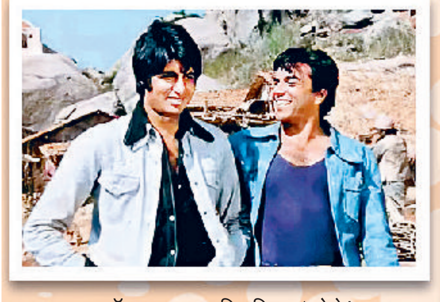

ब्लॉकबस्टर सुपरहिट फिल्म 'शोले'

कल्ट क्लासिक फिल्म 'मुगल-ए-आजम'

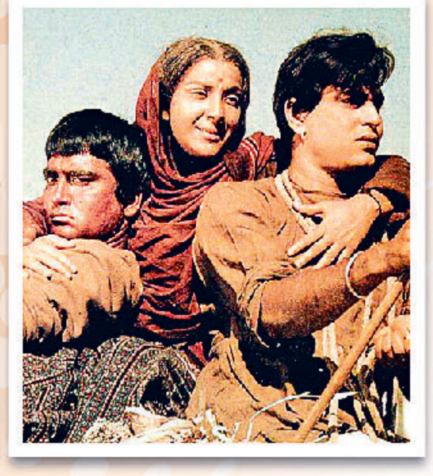

कालजयी फिल्मों में शामिल है 'मदर इंडिया'

सिल्वर स्क्रीन / हेमंत पाल

कालजयी फिल्में वे होती हैं, जिनमें कलात्मक उत्कृष्टता हो। वे सिर्फ दर्शकों का मनोरंजन ही नहीं करतीं, ये फिल्में ऐसे विषयों से जुड़ी होती हैं, जो मानवीय जीवन और अनुभव के विभिन्न पहलुओं को सामने लाने का माध्यम बनती हैं। इनकी प्रासंगिकता तात्कालिक नहीं होती। ये फिल्में दशकों बाद भी दर्शकों से जुड़ने में सक्षम रहती हैं। हालांकि बॉक्स ऑफिस पर फिल्मों की कारोबारी सफलता भी बहुत मायने रखती है, पर सबसे बड़ी सफलता है किसी फिल्म का कालजयी होना।

कॉस्टिंग-इनकम-सक्सेस का फंडा: यह बात सच है कि किसी भी फिल्म के बॉक्स ऑफिस कलेक्शन या फिल्म से इनकम के आधार पर उसे हिट या फ्लॉप का तमगा दे दिया जाता है। फिल्म की कमाई का सीधा सा अर्थशास्त्र यह है कि फिल्म अपनी कुल लागत से ज्यादा कारोबार करे। जो फिल्म जितना अधिक बिजनेस करती है, उस हिसाब से उसकी सफलता का आकलन किया जाता है।

बॉक्स ऑफिस पर सक्सेस फैक्टर्स: बॉक्स ऑफिस पर फिल्मों की सक्सेस के अनेक फैक्टर्स होते हैं। आज के दौर में फिल्में अकसर जबर्दस्त एडवर्टाइजमेंट के साथ रिलीज होती हैं, जो तत्काल टिकट-बिक्री को बढ़ाती हैं। उनकी मार्केटिंग और प्रचार का भी मैजिकल अट्रैक्शन पैदा किया जाता है। यही दर्शकों को आकर्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। हालांकि यह फंडा हर फिल्म के लिए सफल नहीं होता, इसलिए क्योंकि ये इफेक्ट टेंपरेरी हो सकते हैं, जो ऑडियंस को एक बार थिएटर तक खींच सकते हैं, लेकिन अगर फिल्म कंटेंट में दम नहीं है तो कुछ ही समय में सारा प्रचार का जादू फेल भी हो जाता है।

क्लासिक फिल्मों की खासियत: सवाल यह भी है कि अधिक निर्माण लागत और अच्छी-खासी कमाई वाली सभी फिल्में क्या लंबे समय तक दर्शकों को याद रह पाती हैं? इसका जवाब है, शायद नहीं, क्योंकि फिल्में महंगी निर्माण लागत या कमाई से नहीं, बल्कि अपने कथानक, निर्देशन और कलाकारों के अभिनय से याद रखी जाती हैं। बॉलीवुड में कई ऐसी फिल्में भी आईं, जिसने व्यावसायिक रूप से बड़ी सफलता पाई, लेकिन उन फिल्मों की कहानी या कलात्मकता ऐसी नहीं थी कि उन्हें समय के साथ याद रखा जाए। वहीं कुछ फिल्में कम बजट में बनीं, कम चलीं, लेकिन कालजयी हुईं। करोड़ों का कारोबार करने वाली सभी सुपरहिट फिल्में कालजयी इसलिए नहीं बन पातीं क्योंकि बॉक्स ऑफिस पर सफलता व्यावसायिक पहलुओं जैसे मार्केटिंग, प्रचार और दर्शकों की तात्कालिक पसंद पर निर्भर होती है। जबकि कालजयी फिल्में समय की कसौटी पर खरी उतरने वाली कला, गहराई और स्थाई सामाजिक प्रासंगिकता से जन्म लेती हैं। बॉक्स ऑफिस पर किसी फिल्म का हिट होना, अकसर एक विशिष्ट समय की प्रवृत्ति होती है, जो समय के साथ धुंधली हो सकती है। लेकिन कालजयी फिल्में मानवीय भावनाओं, विचारों और सामाजिक बदलावों को पकड़ती हैं, जो उन्हें पीढ़ी दर पीढ़ी प्रासंगिक बनाती हैं।

कॉमर्शियली फ्लॉप पर क्लासिक 'मेरा नाम जोकर'

बहुत कम बनती हैं कालजयी फिल्में: सौ सालों से ज्यादा लंबे भारतीय फिल्म इतिहास में आज भी ऐसी फिल्में अंगुली पर गिनी जा सकती हैं, जो हर दौर में पसंद की जाती रही हैं। 'कालजयी' का मतलब है, समय के साथ अपनी प्रासंगिकता और महत्व को बनाए रखना। कालजयी फिल्में समय काल के सामाजिक रुझानों, तकनीकी नवाचारों या विशिष्ट जनसांख्यिकी को पूरा करती हैं, जो समय के साथ बदल भी सकती हैं।

कालजयी फिल्मों के जरूरी तत्व: अगर फिल्मों को कालजयी बनाने वाले तत्वों की बात की जाए, तो उनमें कलात्मक गुणवत्ता बेहद जरूरी है। कई व्यावसायिक फिल्में तकनीकी या कलात्मक गहराई की कमी दिखाती हैं। प्रासंगिकता के नजरिए से कहा जाए, तो कालजयी फिल्में सार्वभौमिक विषयों जैसे प्यार, न्याय या मानवीयता की नैतिक दुविधाओं को उजागर करती हैं, जो किसी भी समय में दर्शकों के साथ जुड़ जाती हैं। ऐसी फिल्में जो समाज में गहराई से जुड़ती हैं, महत्वपूर्ण सामाजिक बदलावों को प्रेरित करती हैं या मानवीय अनुभव की नई व्याख्या प्रस्तुत करती हैं। ऐसी कई फिल्में हैं, जिन्होंने बॉक्स ऑफिस पर करोड़ों कमाए, लेकिन कुछ सालों बाद उन्हें भुला दिया गया है, क्योंकि वे किसी विशेष समय की उपज थीं। दूसरी और ऐसी फिल्में भी हैं, जिन्होंने रिलीज के समय बड़ी कमाई नहीं की, लेकिन अपनी कलात्मक गुणवत्ता, कहानी और स्थायी विषयों वाले कथानक की वजह से आज भी याद की जाती हैं और देखी जाती हैं।

कुछ कालजयी हिंदी फिल्में: बॉलीवुड की कुछ फिल्में ऐसी हैं, जो अपने रिलीज के दशकों बाद भी अपना एक अलग मुकाम रखती हैं। इन फिल्मों को हर दौर में हर पीढ़ी के दर्शकों का प्यार मिला। 'कागज के फूल', 'मदर इंडिया', 'मुगल-ए-आजम', 'बॉबी', 'शोले', 'दीवार', 'उमराव जान' जैसी फिल्मों को आज भी दर्शक याद करते हैं। इन फिल्मों की गिनती बॉलीवुड के क्लासिक कल्ट के रूप में होती है। खास बात यह है कि इन फिल्मों ने व्यावसायिक रूप से भी सफलता के झंडे गाड़े थे।

कई फिल्में अपने समय में व्यावसायिक रूप से अच्छा प्रदर्शन नहीं कर सकीं, लेकिन बाद में उन्हीं फिल्मों को बॉलीवुड की कल्ट क्लासिक का दर्जा मिला। उदाहरण के तौर पे 'मेरा नाम जोकर' और 'सिलसिला' जैसी फिल्मों को देखा जा सकता है।

ये वे फिल्में हैं, जो सिर्फ मनोरंजन ही नहीं करतीं, बल्कि मानवीय भावनाओं, सामाजिक मुद्दों और मानवीय रिश्तों की गहरी समझ को भी प्रस्तुत करती हैं, जिससे वे हमेशा के लिए कालातीत बन जाती हैं। *